PDF Compressor Free Version

Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 42 • 26 जुलाई - 1 अगस्त, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-07-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

भिक्षु वाणी

सहिष्णुता

जेसो गोलो गार को,
ज्यूं थमे ज्यूं लाल।

मिट्टी के गोले को ज्यों-ज्यों तपाया जाता है, त्यों-त्यों वह लाल होता जाता है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का भीलवाड़ा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

अहिंसा और नैतिकता विद्यमान रहे व्यक्ति के जीवन में : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १८ जुलाई, २०२१

भैक्षव शासन तेरापंथ के एकादशम महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः अपनी धवल सेना के साथ जी-हाईस्कूल से तेरापंथ आदित्य नगर में चतुर्मास-२०२१ प्रवेश हेतु मंगल प्रस्थान किया। लगभग प्रातः ९ बजकर २१ मिनट पर परम पावन पूज्यप्रवर का चतुर्मास स्थल में मंगल प्रवेश हुआ।

जैन धर्म तेरापंथ धर्म के एकादशम अधिशास्ता ने मंगल पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न होता है कि दुनिया में उत्कृष्ट मंगल क्या है? आदमी के मन में मंगल की कामना रहती है। वह स्वयं का भी मंगल चाहता है और दूसरों के लिए भी मंगलकामना अभिव्यक्त करता है। मंगल पाठ सुनने से मंगल की आकांक्षा रहती है। मंगल के लिए प्रयास भी किया जाता है।

ज्योतिष के अनुसार शुभ मूहुर्त देखा जाता है। यह भी एक मंगल की प्राप्ति का प्रयास है। मंगल के संदर्भ में गुड़ आदि चीजें ली जाती हैं। मंत्र पाठ भी करते हैं, परंतु शास्त्र में बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही गई कि उत्कृष्ट मंगल क्या है। उत्कृष्ट मंगल है–धर्म। धर्म हमारे साथ में है, तो मंगल हमारे साथ में है।

प्रश्न होता है, धर्म क्या है? शास्त्रकार के अनुसार श्लोक के एक चरण में तीन प्रकार बता दिए–'अहिंसा संजमो तवो'। ऐसा लगता है कि कितने-कितने ग्रंथों का सार इस एक चरण में समाहित कर दिया है। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। ये तीनों जीवन में हैं, तो धर्म है, मंगल है।

अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है जो सबके लिए क्षेमंकरी-कल्याणकारी है। अहिंसा भगवती है। अहिंसा को परम धर्म कहा गया। एक साधु के लिए तो अहिंसा धर्म आचरणीय होता ही है। साधु तो दयामूर्ति, क्षमामूर्ति, समतामूर्ति होना चाहिए। साधु के लिए कोई शत्रु नहीं।

आप लोग गृहस्थ हैं, उनके लिए भी अहिंसा सेवनीय है, अनुपालनीय है। अहिंसा एक नीति है। जहाँ जनता है, वहाँ शासनतंत्र भी चाहिए। लोकतंत्र में जनता का शासन होता है। भारत में धर्म निरपेक्षता के साथ पंथ निरपेक्षता होनी चाहिए। राजतंत्र हो या लोकतंत्र, अनुशासन तो सब जगह उपयोगी है।

लोकतंत्र में कर्तव्य निष्ठा न हो, अनुशासन न हो तो यह लोकतंत्र का देवता भी विनाश को प्राप्त कर सकता है। अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जो समाज नीति का, राजनीति का, धर्मनीति का प्राण तत्त्व बने।

हम मैत्री-अहिंसा में विश्वास करने वाले हैं। चलाकर आक्रमण नहीं करते। एक हिंसा है, आरम्भजा हिंसा। एक हिंसा प्रतिरोधजा हिंसा। एक है संकल्पजा हिंसा। आरम्भजा हिंसा और प्रतिरोधजा हिंसा तो आवश्यक हिंसा है। संकल्पजा हिंसा न हो। यह हिंसा त्याज्य है।

जहाँ हिंसा है, अशांति है, उसका सही समाधान होना चाहिए। युद्ध विराम युद्ध करने से पहले ही कर लेना चाहिए। हिंसा अंतिम समाधान नहीं है। अहिंसा धर्म है और मंगल है। इसी तरह संयम धर्म है और मंगल है। आदमी के खान-पान, वाणी का संयम हो। विचार और मन का, इंद्रियों का संयम हो।

बहुत ऊँची सेवा का साधन राजनीति है। राजनीति गंदी नहीं है। राजनीति करने वाले के विचार गंदे हो सकते हैं। राजनीति में अहिंसा-नैतिकता बनी रहे। सेवा में निस्वार्थ भाव बना रहे। सत्ता पा लेना बड़ी बात है, पर सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं, सेवा करने के लिए है। राजनीति में आकर सेवा नहीं की तो राजनीति में आना बेकार है, जैसे बकरी के गले के स्तन।

हम भगवान महावीर से जुड़े जैन श्वेतांबर तेरापंथ से जुड़े हुए हैं। उसके प्रथम अनुशास्ता आचार्य भिक्षु स्वामी हुए हैं। उन्होंने कहा था छोटे जीवों की भी हिंसा न हो। भारत का मानो सौभाग्य है कि भारत में संत-संपदा, ग्रंथ संपदा और पंथ-संपदा है। भारत समृद्ध देश है। संत-संपदा से सन्मार्ग मिलता रहे। ग्रंथ संपदा से ज्ञान मिलता रहे। पंथ-संपदा से पथदर्शन मिलता रहे तो बड़ा लाभ मिल सकता है।

जीवन में तपस्या हो। आदमी सुविधावादी न हो। राजनीति भी एक प्रकार की तपस्या हो सकती है, जहाँ स्वार्थ न हो, जनता की सेवा हो। वहाँ मंगल है। जैन धर्म में तो खाना छोड़ना भी तपस्या है। अब चतुर्मास भी लग रहा है। संत चार महीने एक जगह रहते हैं। इन चार महीनों में आम तौर से यात्रा नहीं की जाती है।

इस बार हमने भीलवाड़ा-मेवाड़ में चतुर्मास करने के लिए आज यहाँ प्रवेश किया है। इसमें जनता को जितना संभव हो सके, लाभ मिले। भीलवाड़ा का चतुर्मास अच्छा रहे, उपलब्धिकार रहे। राज्यपाल महोदय का आगमन हुआ है। दो सौ से ज्यादा साधु-साध्वियाँ यहाँ भीलवाड़ा में इकट्ठे हो गए हैं। एक संत-समागम हो गया है। अनेक संत यहाँ पधारे हैं। कई साध्वियाँ भी आई हैं। वृद्ध व रत्नाधिक संतों को देखने का मौका मिला है। सबमें खूब साता-आनंद रहे। अच्छी हमारी साधना चले। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी की कृपा हम पर बनी रहे। मंगलकामना।

(शेष पृष्ठ २ पर)

PDF Compressor Free Version

✦ तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।
–आचार्य श्री महाश्रमण

मेवाड़ स्तरीय अभिनंदन समारोह

कर्म का बंधन शब्दों से ही नहीं, भावों से भी होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

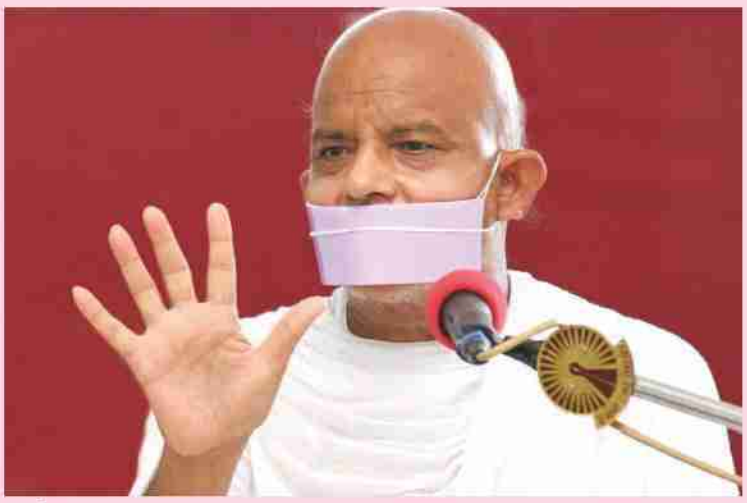

चित्तौड़गढ़, १२ जुलाई, २०२१

जन-जन के आकर्षण, महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक ग्रंथ में मैं अकेला हूँ, एकत्व भावना की बात बताई गई है। मैं अकेला हूँ, यह एक अध्यात्म का सूत्र-सिद्धांत है। परंतु मैं अनेक भी हूँ, यह भी एक तथ्य प्रतीत हो रहा है।

अनेक बातें सापेक्ष होती हैं। एक नय, एक दृष्टिकोण से एक बात सही है, तो दूसरे नय से, दूसरे दृष्टिकोण से अन्य बात भी सही हो सकती है। जैन दर्शन में दो नय बताए गए हैं–निश्चय नय और व्यवहार नय। दोनों अपनी-अपनी भूमिका में यथार्थ है।

हम कहीं जाते हैं, तो कहते हैं कि गाँव आ गया, पर गाँव तो जहाँ था वहीं है, हम गाँव आ गए। गाँव आ गया यह बात सही कैसे हो सकती है। यह एक व्यवहार है। गाँव निकट आ गया। ये भाषा है, भाषा तो अपने आपमें जड़ है। भाषा के पीछे भाव क्या है, वो मूल तत्त्व होता है। कभी-कभी हम अपने भाव भाषा में अभिव्यक्त करने में असमर्थ महसूस कर सकते हैं।

भाषा तो भावों का लंगड़ाता सा अनुवाद है। खास बात यह है कि जो हम बोल रहे हैं, उसके पीछे हमारा भाव क्या है? हम छल-कपट से बोल रहे हैं या सरलता से बोल रहे हैं। भाषा में सरलता है, तो पाप कर्म का बंध नहीं होता। व्यवहार वचन भी दोषकारक नहीं है।

व्यवहार में भंवरा काला हो सकता है, पर निश्चय में वह पाँच रंग वाला है। किस दृष्टिकोण से कौन सी बात ठीक है, यही अनेकांत है। प्रस्तुति के पीछे लक्ष्य क्या, भावना क्या वो मूल तत्त्व है। शब्द से कर्म बंध नहीं, भाव से होता है।

प्रश्न है, मैं अकेला कैसे हूँ और अनेक कैसे हूँ? अकेला तो इसलिए कि यह सिद्धांत है कि खुद के कर्म खुद को भोगने पड़ते हैं। मैं अकेला जन्मा था। मैं अनेक इसलिए हूँ कि मेरे पास अनेक संत लोग बैठे हैं। अकेला नहीं हूँ, पूरा धर्मसंघ मेरे साथ है। यह एक प्रसंग से समझाया कि अकेले नहीं हैं।

शरीर और आत्मा मिलकर अनेक हैं, शरीर मेरे साथ है। मेरे साथ में सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप है। मैं अकेला भी हूँ और अनेक भी हूँ। यह किस अपेक्षा से किसी दृष्टि से कही जा रही है, वह मूल है। एक प्रसंग से समझाया कि परिवार का भरण-पोषण करने के लिए आदमी पाप-कर्म करता है, पर जब उदय में वो कर्म फल देंगे तो परिवार वाले साथ नहीं देंगे। स्वयं को ही भोगना पड़ेगा।

पुण्य का फल हो या पाप का फल खुद को ही भोगना पड़ता है। व्यवहार में कहते हैं कि पुरखों की पुण्याई खा रहे हैं। पर निश्चय में पुरखों ने अपनी पुण्याई तो भोग ली। हम तो अपनी पुण्याई भले भोग लें, पुरखों की नहीं। निमित्त आदि की बात हो सकती है, पर अपना किया, अपने ही भोगेंगे।

शास्त्रकार ने कहा कि ज्ञाति लोग हैं, वे भी दुःख को बँटा नहीं सकते। मित्र वर्ग, बेटे, बांधव कोई दुःख को बँटा नहीं सकते। अकेला आदमी-प्राणी अपने कर्म भोगता है। सिद्धांत है कि कर्म करने वाले का अनुगमन करते हैं, उसी के पीछे जाता है। जैसे व्याकरण में क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है। एगो हं–मैं अकेला हूँ।

पवित्र मैत्री सबके साथ रखो, बुरा किसी का मत करो। किसी के प्रति दुर्भावना मत रखो। विश्वास और दोस्ती किसी योग्य के साथ ही करो, हर किसी का विश्वास मत करो। यह विश्वास तो करो ही मत कि मेरे कर्म जब उदय में आकर भोगने में आएँगे तो दूसरे हाथ बँटा लेंगे।

व्यवहार में भी हम कभी अकेले हो जाते हैं। जिनको हम अपना मानते हैं, वे भी धोखा दे देते हैं। मेरी आत्मा अपनी है, मेरे कर्म अपने हैं। व्यवहार में सबका भला करें। अच्छा, आध्यात्मिक सेवा जितनी हो सके करें। अति विश्वास में न रह जाएँ कि वो मेरे, वो मेरे। मेरे मेरे ही थे तो हमने घर छोड़ा ही क्यूँ? साधु क्यों बनें? यह शरीर भी मेरा नहीं है। स्थूल शरीर हमेशा साथ नहीं रहेगा।

साधु को तो शरीर पर भी ममत्व नहीं रखना चाहिए। मेरा क्या है? बस! मेरे कर्म मेरे हैं, मेरा धर्म मेरा है। गृहस्थों के लिए निश्चय में धन, मकान मेरा नहीं है, सब पराए हैं। अपना कर्म-धर्म अपना है।

हमारा राजस्थान में आना हुआ है। राजस्थान का मेवाड़ संभाग। मेवाड़ स्तरीय यह अभिनंदन-स्वागत का उपक्रम चल रहा है। मेवाड़ के भीलवाड़ा में चतुर्मास करना भी निर्धारित है। मेवाड़ में कुछ महिनों का हमारा संभावित प्रवास है। मेवाड़ की जनता के लिए ज्यादा अनुकूलता है, धार्मिक लाभ लेने का। स्थितियों-परिस्थितियों को जानकर आदमी आगे बढ़े। हमारा प्रवास अच्छा रहे। राजनीति से जुड़े लोग भी खूब आध्यात्मिक संदर्भों में देश की जनता की सेवा करने का प्रयास करें। नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में नियोजन करते रहें। मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की मेवाड़ स्तरीय अभिवंदना-स्वागत में गुलाबचंद कटारिया, सांसद सी०पी० जोशी, स्थानीय सभाध्यक्ष सुनील ढीलीवाल, तुषार सुराना, कन्या मंडल से आराधना भंडारी, मेवाड़ कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत, टीपीएफ अध्यक्ष चिराग ढीलीवाल, सुरेश धाकड़, महेंद्र कोठारी, भूपेंद्र चोरड़िया, महासभा के पूर्वाध्यक्ष किशनलाल डागलिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, मेवाड़ कॉन्फ्रेंस महिला प्रकोष्ठ, ऋषि दुगड़, किरण चोरड़िया, अणुव्रत समिति से, डॉ० खाब्या, ऋषा ढीलीवाल, महिला मंडल मंत्री अंकिता श्रीश्रीमाल एवं तेयुप ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। भीलवाड़ा चतुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने सभी को चतुर्मास में पूज्यप्रवर की सेवा का अधिक-से-अधिक लाभ लेने के लिए आह्वान किया।

पूज्यप्रवर ने इस अवसरपर फरमाया कि लंबी यात्रा के बाद राजस्थान मेवाड़ में आना हुआ है। मेवाड़ में चतुर्मास भी सामने है। सृष्टि में कोरोना जैसी स्थितियाँ समय-समय पर किसी रूप में हो सकती हैं। वे भी मानो कोई परीक्षा लेने के लिए आती है। आदमी अपनी शांति में, तरीके से आगे बढ़ने का प्रयास करे, जितना संभव हो। समता का, समाधान का भाव का यथोचित प्रयास किया जा सकता है। संभावित प्रवास में धार्मिकता, आध्यात्मिकता जितनी उन्नति हो सके, वैसा यथासंभव प्रयास भी होना चाहिए। सबमें खूब अच्छी भावना, अच्छा उत्साह बना रहे, मंगलकामना।

मुनि दिनेश कुमार जी ने सुमधुर गीत–'गण रा नाथ पधार्‌या पहाड़ी धरती पर' का संगान किया। मुनि हितेंद्र कुमार जी, मुनि अनुशासन कुमार जी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि प्रेम से भरी आँखें, श्रद्धा से भरा हुआ सिर, सहयोग करते हुए हाथ, सन्मार्ग पर चलते हुए पाँव और सत्य से जुड़ी जीभ ईश्वर को बहुत पसंद है।

व्यक्ति के जीवन में अहिंसा और नैतिकता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि अहिंसा यात्रा के अंतर्गत प्रलंब यात्रा करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर आज मेवाड़ की औद्योगिक नगरी, वस्त्र नगरी, भीलवाड़ा में चतुर्मास के प्रवास करने के लिए पधारे हैं। भीलवाड़ा वासियों का सौभाग्य है कि लगभग २६१ वर्ष पश्चात परमपूज्य ने कृपा की और चतुर्मास होने जा रहा हैं। नए इतिहास का सृजन होने जा रहा है।

बदनौर रियासत के कंवर साहब वी०पी० सिंह जो पंजाब के गवर्नर हैं ने पूज्यप्रवर की सेवा उपासना की। पंजाब के गवर्नर वी०पी० सिंह ने पूज्यप्रवर का स्वागत-अभिवादन किया। प्रकाश सुतरिया अध्यक्ष प्रवास व्यवस्था समिति ने भी पूज्यप्रवर का स्वागत किया। व्यवस्था समिति द्वारा आगंतुक मेहमानों का मोमेंटो व साहित्य से सम्मान किया गया।

भीलवाड़ा प्रवासी, सरदारशहर निवासी मीनाक्षी आंचलिया ने पूज्यप्रवर से ३१ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ईमानदारी परेशान हो सकती है पराजित नहीं हो सकती : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा शहर, १७ जुलाई, २०२१

तेरापंथ के महानायक आचार्यश्री महाश्रमण जी भीलवाड़ा शहर के बाहर पधार गए हैं। कल प्रातः अहिंसा यात्रा प्रणेता का चातुर्मास हेतु भीलवाड़ा के तेरापंथ नगर में प्रवेश होने जा रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ के २६२ वर्षों के इतिहास में भीलवाड़ा में प्रथम बार तेरापंथ के आचार्यों का चातुर्मास होने जा रहा है।

महामनीषी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अंग्रेजी का प्रसिद्ध सूक्त है–Honesty is the Best Policy. ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। ईमानदारी के विपरीत बेईमानी हो जाती है। दुनिया में ईमानदारी भी चलती है, बेईमानी भी हो जाती है।

प्रश्न होता है कि ईमानदारी का स्वरूप क्या है? और बेईमानी का स्वरूप क्या है? ऐसा लगता है, झूठ न बोलना और चोरी न करना यह तो ईमानदारी है। बेईमानी के दो आयाम हैं–झूठ बोलना और चोरी करना। प्रश्न होता है कि आदमी चोरी क्यों करता है, चोरी करने का कारण क्या है?

चोरी और अपराध के पीछे एक तो भीतर का लोभ, राग-द्वेष ये भाव तो मूल जिम्मेवार है। चोरी का बड़ा कारण लोभ और परिग्रह की चेतना होती है। हिंसा के पीछे आक्रोश-द्वेष की चेतना भी हो जाती है। दूसरा निमित्त कारण है–अभाव। गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी–ये सारे अभाव के ही अंग हैं। अभाव में स्वभाव बिगड़ जाता है। चोरी-अपराध कर लेता है।

आदमी के पास व्यवस्थाएँ ठीक हैं, तो आदमी चोरी-अपराध में न भी जाएँ। यह एक घटना प्रसंग से समझाया। आदमी में संकल्प मजबूत हो तो आदमी अभाव में भी चोरी नहीं करता। माँगना मंजूर पर चोरी से कुछ नहीं लेना।

ईमानदारी को अपनाना है तो आदमी को चोरी से विरत रहने का मनोभाव रखना होगा, ऐसा लगता है। साधु तो चोरी से विरत ही रहता है। गृहस्थों के भी अचौर्य के रूप में अणुव्रत का पालन हो। पूर्णतया चोरी से न भी बचा जा सके, पर चोरी का धन नहीं लेना अप्रमाणिकता नहीं करना।

ईमानदारी के दो आयाम में से एक आयाम चोरी न करना आ जाए तो भी बहुत बचाव हो सकता है। वैसे दोनों आयामों का आपस में संबंध है। पर कोई-कोई आदमी चोरी तो कर लेता है, पर झूठ नहीं बोलता। यह एक घटना प्रसंग से समझाया कि जीवन में ईमानदारी आती है, तो मानो वो साथ में और चीज लेकर आ सकती है।

आचार्य तुलसी के अणुव्रत में भी यही बात है नैतिकता की। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी अहिंसा यात्रा में अहिंसक चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों का विकास यही संदेश दिया था। आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में ईमानदारी सब जगह काम की चीज है। ईमानदारी रहती है, तो सरकार अच्छी चल सकती है। प्रशासन, आम आदमी और समाज अच्छा रह सकता है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

PDF Compressor Free Version

हमारे जीवन से संत संगति का विशिष्ट महत्त्व है : आचार्यश्री महाश्रमण

हमीरगढ़, १५ जुलाई, २०२१

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर हमीरगढ़ पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि हमारी दुनिया में साधु हर समय विद्यमान रहते हैं। मानो कि दुनिया का बड़ा सौभाग्य है, कोई भी समय ऐसा नहीं होता जब संपूर्ण अढ़ाई द्वीप में कहीं कोई साधु न हो।

इससे बड़ी बात है कि हमेशा केवलज्ञानी विद्यमान रहते हैं और इसमें भी विशेष बात यह हो सकती है कि दुनिया में कम-से-कम बीस तीर्थंकर सदा विद्यमान रहते हैं। ज्यादा से ज्यादा तो युगपत १७० तीर्थंकर एक साथ एक समय में दुनिया में विद्यमान हो सकते हैं। मानो कि धरती इसीलिए टिकी होगी कि तीर्थंकर-संत पुरुष दुनिया में हमेशा विद्यमान रहते हैं।

तीर्थंकर तो महाप्रवचनकार होते हैं। उनसे बड़ा दुनिया में कोई अध्यात्म का प्रवचनकार मिलना मुझे तो बड़ा मुश्किल लगता है। अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता-पुरुष तीर्थंकर होते हैं। भरत-एरावत क्षेत्र में प्रत्येक अवसर्पिणी और प्रत्येक उत्सर्पिणी काल में २४-२४ तीर्थंकर होते हैं।

भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी के भरत क्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर हुए थे। महाविदेह में तो हमेशा तीर्थंकर रहते हैं, पर भरत और एरावत में हमेशा तीर्थंकर नहीं होते। समय पर तीर्थंकर होते हैं। बाकी समय खाली भी रहता है।

तीर्थंकरों के प्रवचन सुनने का मौका मिले, कितनी अच्छी बात हो सकती है। तीर्थंकर न भी मिले, आचार्य मिले तो उनका प्रवचन भी अच्छी बात है। साधुओं का व्याख्यान सुनो वो भी कल्याणकारी हो सकता है। साधुओं के तो दर्शन मिलने भी बहुत अच्छी बात है। साधु तो तीर्थ के समान होते हैं। चलते-फिरते तीर्थ होते हैं।

संतों के दर्शन मिलना तीनों कालों से संबंधित बात है। वर्तमान में तुम साधु के भक्ति से दर्शन करोगे, तो कर्म निर्जरा होगी। भविष्य के शुभ का हेतु है। कारण निर्जरा से पुण्य का बंध होगा। पहले अतीत में कोई ऐसा सत्कर्म किया होगा तब तुमको साधुओं के दर्शन का योग मिला। उनकी वाणी सुनने का मौका मिल जाए तो फिर कहना ही क्या?

साधु की पर्युपासना करने से १० लाभ हो सकते हैं—कुछ सुनने को मिल सकता है। सुनने से ज्ञान मिलता है, ज्ञान प्रकाश है। ज्ञान से विज्ञान होगा। हेय, उपादेय का विवेक होगा। हेय-उपादेय को जानने से प्रत्याख्यान कर सकता है। प्रत्याख्यान से संयम हो जाएगा, संयम से अलाश्रव-संवर हो जाएगा। कर्म बंध रुक जाएगा। सम्यक्त्व संवर से तप हो जाएगा। तप से कर्म निर्जरा

होगी। आगे चलते-चलते अक्रिया होगी और अंतिम सिद्धि प्राप्त हो सकती है। मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। इन सबकी जड़ है—साधु की पर्युपासना।

साधुओं की संगति का इतना महत्त्व है कि वो कहाँ से कहाँ ले जा सकती है, कितना ऊँचा उठा सकती है। साधु बनने की भावना आ सकती है। हमारे जीवन में संत-संगति का बड़ा महत्त्व है। उनसे कई बातें ग्रहण की जा सकती हैं।

बहु रत्ना वसुंधरा। धरती पर रत्न बहुत हैं, उन्हें कोई खोजने वाला चाहिए। अच्छों से कुछ अच्छी बात लेने का प्रयास करें। गृहस्थ लोग हैं, वे भी किसकी संगति में रहते हैं? अच्छों के साथ रहेंगे तो अच्छाइयाँ ग्रहण हो सकती हैं। भाषा शिष्ट-शालीन हो।

भाषा शिष्ट और मिष्ट हो तो भाषा विशिष्ट हो जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि जैसी भाषा होगी वैसा सम्मान मिलेगा। सत्संगत से भाषा अच्छी हो सकती है। बड़ों से बड़ी-बड़ी बातें सीख लें तो हमारा जीवन भी बड़ा बन सकता है।

आज साध्वी सुनंदाश्री जी, साध्वी वंदनाश्री जी के दीक्षा पर्याय के २५ वर्ष पूरे हो रहे हैं। दोनों साध्वियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति पूज्यप्रवर के चरणों में अर्पित की।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने आशीर्वचन में कहा कि मुनि जम्बूकुमार जी, साध्वी सुनंदाश्री जी और साध्वी वंदनाश्री जी की दीक्षा साथ-साथ हुई थी। मनुष्य जन्म, जैन धर्म और मैक्षव शासन ये त्रिवेणी संगम हैं। जो इनको प्राप्त हुआ है। हमारे आचार्य दूरदर्शी होते हैं। दोनों साध्वियों के प्रारंभ के जीवन प्रसंग बताए।

पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वचन में फरमाया कि हमारे जीवन में अनेक दिशाओं में अनेक उपलब्धियाँ हो सकती हैं। विद्वता, वक्तृत्व, कवित्व के क्षेत्र में विकास हो सकता है। दूरदर्शिता भी रहस्यमय चीज भी हो सकती है। ज्ञान का विकास व्यवहार में स्थूल रूप में होता है पर सूक्ष्म रूप में प्रकट में दिखाई नहीं देता है। दोनों साध्वियाँ २५ वर्ष पूर्व दीक्षित हुई थीं। गुरुओं से जो मिलता है, वो जीवन की एक निधि हो जाती है। हमारे धर्मसंघ में कई-कई साधु-साध्वियों ने अच्छा विकास किया है।

गुरुओं की शिक्षा गाँठ बाँधने वाली हो जाती है। दीक्षा देना एक बात है। बाद में उसके जीवन का विकास करने पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण बात है। जन्म देना एक बात है, निष्पन्न करना एक बात है। समय-समय पर गुरुओं की जो प्रेरणाएँ मिलती हैं, वो जिंदगी के पथ को बड़ा ठीक बनाने वाला बन सकता है।

गुरु प्रशंसा मेरी भले ना करे पर मेरी गलतियाँ निकालते रहें। कमियाँ निकालते रहें, दिशा निर्देश मिलता रहे। प्रशंसा होने का भी कुछ महत्त्व हो सकता है, पर शिष्य के मन में यह रहे कि मुझे प्रशंसा नहीं मुझे तो शिक्षा चाहिए। प्रशंसा का महत्त्व नहीं है। महत्त्व है, मेरे जीवन में कितनी परिपक्वता-ठोसता वो कितनी आ रही है।

हमारा लक्ष्य बन जाए कि चारित्र के मेरे पर्यव है, वो मेरे किस प्रकार के हैं। निर्मलता कैसी है, मलीनता तो नहीं आई, आई है तो आगे ध्यान दूँ। संयम-रत्न के सामने भौतिक चीजें फीकी हैं, छोटी हैं। संयम रत्न महत्त्वपूर्ण निधि है, कोई लुटेरा इसको ले न जाए। मोहनीय कर्म लुटेरा है। संयम जीवन छूटे नहीं।

आगम का स्वाध्याय करते रहो। यह संयम को सींचन देने वाला है। स्वाध्याय से निर्मलता रह सकती है। २५ वर्षों में ३२ आगम मैंने पढ़े कि नहीं यह देखें। अगर नहीं पढ़े बच गए हैं तो उनको पूरा कर लूँ। आगे २५ वर्षों में आगम बत्तीसी का मूल पाठ अनुवाद का पारायण हो जाए। तो संयम जीवन और पुष्ट हो सकता है।

चारित्रात्माओं में और भी योग्यताएँ हैं, यह सोने में सुहागा है और जो विशेषताएँ हैं, उनका भी और विकास हो। हमारे धर्मसंघ में तीन-तीन संतानों को धर्मसंघ में देने वाले महादानी भी कई हैं। हमारी मंगलकामना है। सभी अपनी प्रतिभा का बढ़िया उपयोग करते रहें। संयम तो है, प्राणभूतता भी आ जाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में हमीरगढ़ की सरपंच रेखा परिहार ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

गृहस्थों के विचार और व्यवहार में अहिंसा की प्रधानता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

माधोपुर (भीलवाड़ा बाहर), १६ जुलाई, २०२१

महायायावर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः माधोपुर पधारे। अमृत देषना प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि हिंसा और अहिंसा ये दो शब्द धार्मिक-साधना में चर्चित होते हैं। हिंसा का अभाव अहिंसा है।

शास्त्रकार ने कहा है कि ज्ञानी आदमी के ज्ञान का सार यह है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। जिसने अहिंसा धर्म व समता को जान लिया और जीवन में आचरित हो जाता है, इसका वह मतलब अध्यात्म-जीवन में आचरित हो जाता है।

अहिंसा को परम धर्म कहा है। हिंसा नहीं करनी चाहिए कारण सबको जीवन प्रिय है, तो मैं दूसरों की प्रिय चीज को नष्ट क्यों करूँ। सब जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। यह अहिंसा के दृष्टिकोण पर संबंधित है। दूसरा दृष्टिकोण है कि हिंसा के साथ राग-द्वेष का भाव जुड़ा है, उससे मेरी आत्मा का अहित होता है। आत्मा का पतन होता है, आत्मा अधोगामिनी बन जाती है। संसार में परिभ्रमण करना पड़ता है। यह दूसरा दृष्टिकोण आत्म-संबंध हो सकता है।

आचार्य भिक्षु ने कहा है—

जीव जीवे ते दया नहीं, मरे तो हिंसा मत जाण।
मारण वाले ने हिंसा कही, नहीं मारे हो ते दया गुण खाण।।

अहिंसा और हिंसा का मूल संबंध अपनी आत्मा के भावों के साथ है। निश्चयनय में आत्मा ही अहिंसा और हिंसा है। जो प्रमत्त रहता है, वो हिंसक है, अप्रमत्त अहिंसक है।

बाहर से हिंसा होना एक बात है, पर अपने भीतर से हिंसा होना अलग बात है। इसलिए द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। द्रव्य हिंसा होने पर भी हिंसा के पाप कर्म का बंधन नहीं होता। उस समय तो केवली के पुण्य का बंध हो जाता है। कारण वह अप्रमत्त और वीतराग है। राग-द्वेष नहीं है। भाव हिंसा से भले हिंसा न हो पर भाव में हिंसा आ गई तो पाप कर्म का बंधन हो जाता है।

हमारे विचारों में, शरीर, वाणी मन में अहिंसा के भाव रहे। हम लोग अभी अहिंसा-यात्रा कर रहे हैं। इसके तीन सूत्र हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। ये तीन सूत्र अहिंसा और संयम की चेतना को मानो पुष्ट करने वाले तत्त्व हैं।

गृहस्थों के विचार और व्यवहार में भी अहिंसा की प्रधानता रहे। 'सादा जीवन, उच्च विचार, मानव जीवन का शृंगार'। अपनी ओर से किसी को तकलीफ नहीं देने की भावना हो।

सूत्र है—सब प्राणियों को अपने समान समझो। जो व्यवहार मेरे लिए प्रतिकूल है, मैं वो व्यवहार दूसरों के साथ भी न करूँ। हिंसा की वृत्ति भीतर में है। दो शब्द हैं—वृत्ति और प्रवृत्ति। प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में कारण के रूप में वृत्ति होती है। प्रवृत्ति एक कार्य है और वृत्ति उसका कारण है।

हिंसा पहले मन के स्तर पर होती है, फिर युद्ध के रूप में आ जाती है। हिंसा के पीछे आदमी के राग-द्वेष के भाव हैं। हिंसा एक परिणाम है, राग-द्वेष का भाव उसका कारण है। कारण जितना कमजोर पड़ेगा-हिंसा भी अपने आप प्रतनु हो सकेगी। शांति के लिए अहिंसा की बड़ी भूमिका होती है। हिंसा दुःखों की जननी है। अहिंसा के लिए अनुकंपा, अभय की चेतना जागृत है। पर कल्याण की भावना हो। परिग्रह भी हिंसा का कारण है। न्याय के प्रति सम्मान हो। आदमी को अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

आज हमारी कई साध्वियों से बरसों के बाद मिलना हुआ है। साध्वी चाँदकुमारी जी 'लाडनूं' व साथ की साध्वियों से वर्षों बाद मिलना हुआ। साध्वी साधनाश्री जी से तो मानो पहली बार मिलना हुआ है। साध्वी मधुबाला जी के सिंघाड़े से भी बरसों बाद मिलना हुआ है। साध्वी कमलप्रभा जी से मिलना हुआ ही नहीं। उनकी सहवर्ती साध्वी ललितकला जी आदि साध्वियाँ आई हैं। भीलवाड़ा आकर भी उनसे मिलना नहीं हुआ। जयपुर से आई साध्वी प्रसन्नप्रभा जी और साध्वी माधुर्यप्रभा जी का आज यहाँ आना हो गया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी साधनाश्री जी के सिंघाड़े ने, साध्वी मधुबाला जी के सिंघाड़े ने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी ललितकला जी जो साध्वी कमलप्रभा जी की सहवर्ती हैं, ने साध्वी कमलप्रभा जी के अंतिम समय के घटना प्रसंग को विस्तार से बताया एवं गीत से अभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रसन्नप्रभा जी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुनि जितेंद्र कुमार जी ने साध्वी कमलप्रभा जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त की।

पूज्यप्रवर का प्रवास आज जी-स्कूल के संस्थान में हो रहा है। यहाँ के पवन अग्रवाल, यहाँ की प्रिंसिपल रत्ना सुराणा ने अपने भावों की पूज्यप्रवर के स्वागत में व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम साधना के द्वारा सिद्धि की यात्रा करते जाएँ।

✦ श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।

— आचार्यश्री महाश्रमण

PDF Compressor Free Version

✦ वे व्यक्ति धन्य हैं, कृतपुण्य हैं, जिनके मन में सत्य के प्रति आकर्षण होता है, जो असत्य से बचने का प्रयास करते हैं।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य तुलसी का 25वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

युगद्रष्टा के नेतृत्व से युग को मिला नया मोड़

नवी मुंबई

आचार्यश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति ने सामुहिक जप आराधना का कार्यक्रम तेरपंथ भवन वाशी-कोपरखेरने में रखा गया।

वाशी में अणुव्रत समिति, मुंबई के पूर्व मंत्री चेतन कोठारी, विनोद बाफना तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र सिंघवी, मंत्री हरीश गादिया, महिला मंडल संयोजिका इंदु बडाला आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण तथा श्रावक-श्राविकाओं ने अपने आराध्य को जप के माध्यम से श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक पवन परमार ने तथा कोपरखैरने में सह-संयोजक सुनील मेहता ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी संस्था-परिषद का सक्रिय सहयोग रहा।

छापर

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी राजगढ़ की ओर विहार करती हुई छापर पधारी। वेदपाल जैन के फार्म हाउस में गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की २५वीं पुण्यतिथि महाप्रयाण दिवस मनाया गया। सुमधुर गीत से वातावरण में गुरुदेवश्री तुलसी की स्मृतियाँ जाग उठी। शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी ने कई रोचक प्रसंग सुनाए। गुरुदेवश्री तुलसी का विराट व्यक्तित्व आज भी जन-जन में समाया हुआ है। उन्होने जीवन-भर मानव जाति की सेवा में अपना श्रम लगाया।

साध्वी सुरेखाश्री जी, साध्वी मधुरलता जी, साध्वी मननप्रभा जी ने सुंदर गीत का संगान करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त की। इस अवसर पर भिवानी सभा के पूर्व अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, विकास जैन, मनीष जैन, गोपाल जैन, विश्रुत जैन, सुदेश जैन, महासभा उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन, सभा अध्यक्ष महेंद्र जैन आदि श्रद्धालु उपस्थित रहे। साध्वीश्री जी ने पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सभी श्रावकों को त्याग-प्रत्याख्यान करने की प्रेरणा प्रदान की। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

चेन्नई

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में अन्नपूर्णा Project, A clean plate campaign, आचार्य तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र के अंतर्गत (आचार्य तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में) राशन वितरण का कार्यक्रम तेरापंथ स्कूल साहुकारपेट में रखा गया। तमिलनाडु में बहुत सारे परिवारों को राशन की आवश्यकता है, चेन्नई तेरापंथ महिला मंडल सेवा के क्षेत्र में हमेशा अग्रणी रहा है। कार्यक्रम से पहले महिला मंडल की बहनों ने माधावरम में विराजमान साध्वी अणिमाश्री जी ने मंगलपाठ एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

चेन्नई, तेममं की अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि तमिलनाडू सरकार में मंत्री पी०के० शेखर बाबू ने महिला मंडल के कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

चेन्नई तेममं ने २२०० किलो चावल, १० सिलाई मशीनें एवं १० सेनेटरी पेड मशीनें जरूरतमंदों को दी गई। सेनेटरी मशीने गवर्नमेंट हॉस्पिटलों में लगाई जाएँगी एवं सिलाई मशीनें जो महिलाएँ खुद स्वावलंबी बनकर और को स्वावलंबी बना सकें उनको दी गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पी०के० शेखर बाबू थे। साथ में डीएमके के सदस्य भी उपस्थित थे। उन्होंने तेममं के कार्यों की सराहना करते हुए कोविड-१९ जैसी महामारी में सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्यारेलाल पितलिया ने की। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विमल चिपड़, मंत्री प्रवीण बाबेल, तनसुख नाहर, अनिल सेठिया एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में अभातेममं के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कात्रेला का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की संयोजिका कंचन भंडारी, रीमा सिंघवी-लता पारख थे एवं हेमलता नाहर-उषा धोका, एस मुरली एवं प्रवीण जैन का कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री गुणवंती खाटेड ने दिया।

मदुरै

हर व्यक्ति धरती पर जन्म लेता है और उनमें से कुछ व्यक्ति अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा जग में अमिट छाप छोड़ देते हैं। उसी कड़ी में एक नाम है—युगद्रष्टा आचार्यश्री तुलसी। आचार्य तुलसी का जीवन बोलता जीवन था। उनहोंने अपनी सृजनात्मक व रचनात्मक शैली से दुनिया को नई राह दिखाई। लघु वय में संयमश्री का वरण कर २२ वर्ष की छोटी अवस्था में तेरापंथ जैसे अद्वितीय धर्मसंघ का दायित्व संभाल लिया। गुरुदेव तुलसी ने जो भी सतरंगी सपने संजोए उन सभी को साकार किया। उन्होंने मानव को मानवता का आकार दिया। मुनि अर्हत कुमार जी ने आचार्य श्री तुलसी के महाप्राण दिवस पर श्रद्धालुओं के बीच अपने विचार व्यक्त किए। सहयोगी युवा संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो संत-महंत, जहाँ जाते हैं, वहाँ लाते हैं बसंत। उन्हीं में रहे हैं तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी जी।

बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी घोर अंधकार में पथ दर्शन करने वाले ज्योतिपुंज थे, उनकी ज्ञानरश्मियों से पूरा संसार आलोकित है। हम उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए जीवन को सार्थक और सफल बनाएँ।

सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकड़िया, मंत्री राजकुमार नाहटा, वरिष्ठ श्रावक नरपत कुमार दुगड़, निर्मल कुमार पारख, मदनलाल बैद, सभा मीडिया प्रभारी अशोक जीरावला, इरोड से पधारे दिलीप हिरण, सुरेश चोपड़ा, कमल बोथरा, नरेश हिरण ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के बच्चों ने रोचक प्रस्तुति दी। कन्या मंडल प्रभारी मधु जीरावला, तेममं की बहनों ने अपने भावों की प्रस्तुति वीडियो के द्वारा गीतिका के माध्यम से दी। मदुरै तेयुप के कई सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला ने किया।

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला

मैसूर।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित इस सेमिनार में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि परिवार एक ऐसी प्रयोग स्थली है जहाँ आनंदमय जीवन का सुखद अहसास होना चाहिए। चिंतन यह करना है कि जिंदगी का सुहाना सफर कैसे हो? परिवार की स्वस्थता के लिए चारित्रिक व्यवहार एवं शुद्ध संस्कारों की जरूरत है। अभिभावक अपनी संतानों को सही दिशा-निर्देश प्रदान करे, ताकि भावी पीढ़ी गुमराह न बने, सम्यक् विकास करती रहे।

भारतीय संस्कृति के पारिवारिक मूल्यों की सुरक्षा और संवर्धन के लिए हर व्यक्ति जिम्मेदार है। सहना जीवन का मूल्यवान गहना है। वाणी की मधुरता जीवन में समरसता भर देती है। संबंधों में संतुलन और उचित मार्गदर्शन खुशहाल जीवन के घटक तत्त्व हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के संगान से हुई। साध्वी सिद्धियशा जी ने कहा कि रोटी कमाना कोई बड़ी बात नहीं परिवार के साथ रोटी खाना बड़ी बात है। किशोर एवं कन्या मंडल में भावपूर्ण लघु नाटिका प्रस्तुत की। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने पी० अल्फाबेट की व्याख्या करते हुए परिवार की महत्ता बताई। प्रांतीय जैन ट्रेनर खुशी गुगलिया ने कहा कि परिवार में संपर्क सहयोग भावना और सामंजस्य की महनीय आवश्यकता है।

साध्वी राजुलप्रभा जी आदि साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से सैकड़ों की तादात में संभागी बनकर श्रावकगण कार्यशाला को सफल बनाया। आभार ज्ञापन कैलाश पितलिया ने किया।

मंगल प्रवेश

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी आदि का महाराष्ट्र सीमा में मंगल प्रवेश हुआ। सीमा प्रवेश के समय अभातेममं की महामंत्री तरुणा बोहरा ने एवं बैंगलोर से जितेंद्र घोषल ने अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी प्रज्ञा जी का प्रवास तेरापंथ सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया की फैक्ट्री में हुआ और वहीं पर वंदन-अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने अपने सीमा प्रवेश के अवसर पर कहा कि कोविड-१९ की विषम परिस्थितियों एवं लॉक डाउन के समय में भी गुरुदेव की असीम कृपा से लक्षित मंजिल को पाने के लिए कर्नाटक से महाराष्ट्र की ओर प्रस्थान कर दिया तथा आज सीमा प्रवेश हो गया।

आगामी चातुर्मास में त्याग, तपस्या की झड़ी लगे और सभी मिलकर इसे सफल बनाएँ। इस अवसर पर साध्वी सरलप्रभा जी, साध्वी विनयप्रभा जी, साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। सीमा प्रवेश के कार्यक्रम में इचलकरंजी के नगर अध्यक्ष अलका स्वामी, अशोक स्वामी, युवा नेता राहुल अवाड़े, नगर सेवक दिलीप मूथा, पश्चिम महाराष्ट्र एरिया समिति के अध्यक्ष उत्तम पगारिया, अभातेममं की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य जयश्री जोगड़, अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षा फाउंडेशन सदस्य विकास सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष सीमा डागा आदि सभी की गरिमामय उपस्थिति रही एवं सभी ने गीत, कविता, वक्तव्य आदि के द्वारा साध्वीश्री जी का अभिनंदन करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य व ऐतिहासिक चातुर्मास हेतु शुभकामना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन पुष्पराज संकलेचा एवं आभार ज्ञापन पूजा आंचलिया ने किया।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

✦ अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।
– आचार्य श्री महाश्रमण

पत्र व्यवहार का पता
अ०भा० तेरापंथ टाइम्स
अणुव्रत भवन, तृतीय तल,
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
E-mail :
abtyptt@gmail.com

PDF Compressor Free Version

आचार्यश्री तुलसी को श्रद्धांजलि स्वरूप कार्यक्रम

हैदराबाद।

हैदराबाद त्रयनगर में विराजित शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी, साध्वी निर्वाणश्री जी, साध्वी मधुस्मिता जी, साध्वी काव्यलता जी आदि की प्रेरणा से तेयुप के जन्मदाता आचार्यश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर नौवें आचार्य को ९ कार्यक्रमों द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

उपवास : कार्यक्रम के अंतर्गत युवकों ने उपवास के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की। उपवास के इस कार्यक्रम में संयोजक निर्मल दुगड़, अरिहंत दुगड़, सुरेश भंडारी और प्रशांत गांधी का विशेष श्रम रहा।

तुलसी सामायिक महायज्ञ : २५वीं पुण्यतिथि पर तेयुप द्वारा अधिक से अधिक सामायिक कराने का लक्ष्य रखा और हर घर में ज्यादा-से-ज्यादा सामायिक करने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं उपाध्यक्ष प्रकाश बोथरा, सुदीप नौलखा, प्रवीण श्यामसुखा, आलोक नाहटा, सुमित दुगड़ और रवि प्रकाश कोटेचा थे।

अखंड जप अनुष्ठान : आचार्यश्री तुलसी की २५वीं पुण्यतिथि पर २५ घंटे का अखंड जाप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक रवि प्रकाश कोटेचा, दिलीप बरड़िया, ऋषभ मेहता, विनीत सुराणा और विशाल लुणावत ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस आध्यात्मिक अनुष्ठान में जोड़ने में सफल रहे।

त्यागमय भावांजलि : आचार्यश्री तुलसी की स्मृति में आगामी वर्ष (२७-६-२१ से २७-६-२२) में समाज से लिंक द्वारा स्वेच्छिक ९ संकल्प छोटे-छोटे व्रत लेने की अपील की गई, जिसकी सभी लोगों ने सराहना की। इस कार्यक्रम के संयोजक आलोक डागा, विनोद दुगड़ और विकास दस्सानी थे।

स्कूल में कम्प्यूटर डोनेशन कार्यक्रम : तेयुप ने गोलीपुरा स्थित सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय में कम्प्यूटर लैब हेतु दो कम्प्यूटर का वितरण किया। तेयुप को इसमें आर्थिक सहयोग कुलदीप भरुट और एक शुभचिंतक द्वारा दिया गया। इस कार्यक्रम के दौरान तेयुप अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, मंत्री अतुल डूंगरवाल, उपाध्यक्ष और कार्यक्रम के संयोजक पीयूष बरड़िया, सहमंत्री धीरज लुणावत, कोषाध्यक्ष और कार्यक्रम के संयोजक विशाल आंचलिया, विनय नाहटा एवं वंश आंचलिया उपस्थित रहे।

दिव्यांग आश्रम में सामग्री वितरण : सेवा के कार्य के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल ने दिव्यांगों के लिए बने हुए आश्रम में जरूरी दवाइयाँ, राशन सामग्री एवं दैनिक जरूरत की सामग्री का वितरण किया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक अंकित लोढ़ा के साथ रजत कठोतिया, सौरभ डूंगरवाल और तेयुप के अन्य साथी भी उपस्थित रहे।

तुलसी चित्रकला प्रतियोगिता : साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में तुलसी चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजन अंकित लोढ़ा ने किया। इस कार्यक्रम के विजेता रहे—सीनियर ग्रुप—प्रथम गरिमा नवलखा, द्वितीय लक्ष्मीपत बैद, जूनियर ग्रुप—प्रथम उपासना लुणावत, द्वितीय मीत मणोत।

भजनों भरी श्याम गुरुदेव तुलसी के नाम : इस कार्यक्रम को तीन चरणों में आयोजित किया गया। प्रथम चरण के अंतर्गत साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के द्वितीय चरण का आयोजन शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वी निर्वाणश्री जी आदि के सान्निध्य में किया गया, जिसमें भिक्षु प्रज्ञा मंडली के साथ-साथ त्रयनगर के अनेक गायक, कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के तीसरे और अंतिम चरण में आयोजित साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम को तेयुप संगठन मंत्री नवीन लुणिया तथा भिक्षु प्रज्ञा मंडली के संयोजक अभिषेक नाहटा ने संपादित करवाया।

निःशुल्क वैक्सीनेशन ड्राइव

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में कोविशील्ड निःशुल्क वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक एमपीएल स्पोर्ट्स फाउंडेशन एवं मेडिकल मेनेजमेंट मणिपाल हॉस्पिटल के माध्यम से कार्यक्रम संपादित हुआ। ६०० लोगों को निःशुल्क वैक्सीन लगवाई गई। सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ एवं रिबन को खोलते हुए उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया एवं वैक्सीनेशन की विशेष जानकारी प्रदान की।

इसी क्रम में बीजेपी के विजयनगर क्षेत्र नेता एस रविंद्रा एवं भावी वेंकटेश ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर एमपीएल स्पोर्ट्स के वरिष्ठ जगदीश ने भी कार्य की अनुमोदना की। व्यवस्था में भद्रेश भाई शाह की विशेष भूमिका रही।

इस अवसर पर सभा से उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, महेंद्र टेबा, मंत्री मंगल कोचर, सहमंत्री प्रकाश गांधी, अशोक कोठारी, संतोष मालू, मनोहर बोहरा, संयोजक के रूप में पवन चावत एवं अनेक सदस्यगण तथा अन्यजन उपस्थित थे। विशेष सेवा किशोर मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा की गई। आभार ज्ञापन मंत्री ने किया।

ईमानदारी परेशान हो सकती है...

(पृष्ठ २ का शेष)

ईमानदारी के साथ कुछ काँटे, कुछ कठिनाइयाँ आ सकती हैं। कुछ काँटों को झेलने का मनोबल हो तो फूलों की सुगंध मिल सकती है। कोमलता भी मिल सकती है। ईमानदारी परेशान तो हो सकती है, कठिनाई से कहीं ग्रस्त हो सकती है पर ईमानदारी परास्त नहीं हो सकती।

ईमानदारी का रास्ता कहीं कठिन तो हो सकता है, पर आगे मंजिल बढ़िया है। मंजिल बढ़िया है तो सीढ़ियाँ जैसी भी हैं—टेढ़ी-मेढ़ी पार करो, आगे तो स्थान बढ़िया है ना। साध्य हमारा बढ़िया है, तो साधन कुछ कठिनाई पूर्ण हो, कठोर हो, उस अच्छी मंजिल को पाने का प्रयास करना चाहिए।

ईमानदारी से दीर्घकालीन का हित हो सकता है। बेईमानी से अल्प काल की भले सुविधा हो जाए, पर उस रास्ते से आगे कहीं गढ़ढ़े में गिरना न पड़ जाए। झूठ और चोरी के नीचे दुःख का गढ़ढ़ा है। बेईमानी तो एक जाजम के समान है, उसके नीचे दुःख का गढ़ढ़ा है। सच्चाई है, भले कंटकाकीर्ण कुछ-कुछ मार्ग हो, पर आगे फूल ही फूल है। खूब सुख-शांति का स्थान है।

अभी तो चारित्रात्माओं का आगमन हो रहा है। साध्वी जिनबाला जी का सिंघाड़ा व साध्वी मृदुबाला जी भी दो साध्वियाँ आई हैं। सात संवत्सरी बाद मिलना-आना हुआ है। खूब अच्छी साधना-सेवा भावना रहे। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता यथोचित्य रहे। समणियाँ भी कई आई हैं। वे अच्छा काम करें।

साध्वी जिनबाला जी, साध्वी अखिलयशा जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। समणी संचितप्रज्ञा जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

सिलीगुड़ी।

अभातेयुप संस्कारक नरेंद्र सिंघी की सुपुत्री महक का शुभ विवाह बांकुड़ा निवासी अभिषेक बगड़िया के साथ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन में किया गया। अभातेयुप जैन संस्कारक अनोपचंद बोथरा एवं नवरतन बैंगानी तथा स्थानीय जैन संस्कारक पंकज सेठिया एवं अजय बरमेचा ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ विवाह संपन्न करवाया।

कार्यक्रम के पश्चात संस्कारक द्वारा युगल जोड़े को १ वर्ष के लिए त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष संजय छाजेड़ ने युगल जोड़े की दीर्घायु की मंगलकामना की। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष नवरतन पारख, सभा के उपाध्यक्ष मदन संचेती, अभातेयुप पूर्व सहमंत्री सुभाष सिंघी परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष दीपक बोथरा, टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख व समाज के अनेक गणमान्य सदस्यों ने सहभागिता दर्ज कराई।

हनुमंतनगर।

प्रतीक राखेचा और अमनदीप कौर का शुभ विवाह संस्कारक दिनेश मरोठी, सह-संस्कारक धर्मेश कोठारी ने जैन संस्कार विधि के पूरे विधि-विधान, मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया गया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष पवन बोथरा ने नव-विवाहित जोड़े को शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर परिषद की ओर से विवाह प्रमाण पत्र और मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

जयपुर।

जयश्री-नरेंद्र दुगड़ के सुपुत्र अमन दुगड़ का विवाह संस्कार रोशन-राजेश बांठिया की सुपुत्री सुप्रज्ञा बांठिया के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया गया।

तेयुप, जयपुर के द्वारा वर-वधू एवं दोनों पक्षों से लिखित में पंजीकृत प्रमाण पत्र पर उनकी सहमति ली गई तदोपरांत ही संस्कारक राजेश जैन ने विवाह की सभी रश्मों का विधिपूर्वक निर्वहन करते हुए जैन संस्कार विधि से विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप के कार्यवाहक अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, ही संस्कारक राजेश जैन व तेयुप सदस्य विनीत सुराणा, सुनील चोरड़िया ने मंगल भावना पत्रक भेंट कर मंगलकामना व्यक्त की।

नामकरण संस्कार

हनुमंतनगर।

परिषद कार्यकारिणी सदस्य संपतराज मनोज पोरवाड़ की पुत्री का नामकरण संस्कार कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक सज्जनराज कटारिया, सह-संस्कारक धर्मेश कोठारी द्वारा पूरे विधि-विधान, मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया गया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष पवन बोथरा एवं मंत्री धर्मेश कोठारी ने पोरवाड़ परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की। रेखा पोरवाड़ एवं मनोज पोरवाड़ द्वारा परिषद एवं जैन संस्कार विधि की सराहना की। इस अवसर पर परिवार के सदस्यों ने एक वर्ष के लिए अलग-अलग त्याग-प्रत्याख्यान किए।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

उधना।

चंडालिया एवं चपलोत परिवार के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक अनिल चंडालिया, संजय बोथरा, विकास कोठारी, अनिल चोरड़िया, अनिल सिंघवी, सुनील चंडालिया एवं सुभाष चपलोत के द्वारा विधिवत मंत्रोच्चार सहित संपादित करवाया गया।

संस्कार विधि में श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल चंडालिया, तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला प्रभारी सुरेश चपलोत, कोषाध्यक्ष निर्मल चपलोत एवं कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष एवं संस्कारक संजय बोथरा ने संस्कारकों का एवं उपस्थित सभी महानुभावों का आभार ज्ञापन किया। संस्कारक अनिल चंडालिया ने उपस्थित सभी को त्याग करवाते हुए विधि संपन्न करवाई।

PDF Compressor Free Version

✦ चारित्र की आराधना से मन, वचन एवं काया का संयम स्वतः हो जाता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

भगवान महावीर के बाद ध्यान की परंपरा

प्रश्न : भगवान महावीर या उनके उत्तरवर्ती आचार्यों ने जिस ध्यान-परंपरा को आगे बढ़ाया, उसके आधारभूत तत्त्व कौन-से हैं? क्या उनका कोई वर्गीकरण किया जा सकता है?

उत्तर : ध्यान साधना की परंपरा ने दो प्रकार की पद्धतियों को स्वीकार किया था। पहली पद्धति थी—धर्म्य-ध्यान की। आचार्य भद्रबाहु इसी परंपरा के पुरस्कर्ता थे। धर्म्य-ध्यान की पद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है। इसमें तत्त्व को विश्लेषित करने की परंपरा है। तत्त्व-विश्लेषण सत्य की खोज से जुड़ा हुआ है। जो साधक जितना अधिक तत्त्व की खोज से जुड़ा हुआ है। जो साधक जितना अधिक तत्त्व की गहराई में पैठेगा, वह उतनी ही गहराई से ध्यान में प्रविष्ट हो सकता है। एक वैज्ञानिक को किसी नई खोज के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। बिना परिश्रम और गहरी लगन के कोई नई खोज के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। बिना परिश्रम और गहरी लगन के कोई व्यक्ति सही माने में वैज्ञानिक बन ही नहीं सकता। इसी प्रकार सत्य की शोध भी वही साधक कर सकता है, जो धर्म्य-ध्यान के माध्यम से तत्त्व की गहराई तक पहुँच जाता है।

ध्यान की दूसरी पद्धति थी—शुक्लध्यान की। इस पद्धति से ध्यान करने वाले मानसिक स्थिति पर विजय पाने में सफल हो रहे थे, पर उनका तत्त्वज्ञान विकसित नहीं हो सका। ध्यान के चार भेदों में शुक्ल-ध्यान अंतिम ध्यान है। यह विशिष्ट प्रकार की पृष्ठभूमि पर ही घटित हो सकता है। वैसे इन चार भेदों में प्रथम दो भेद—आर्त-ध्यान और रौद्र-ध्यान साधना की दृष्टि से उपादेय नहीं हैं। क्योंकि इनसे साधना का विकास नहीं, ह्रास होता है। इन्हें ध्यान की कोटि में परिगणित करने का एकमात्र उद्देश्य यही रहा है कि आर्त और रौद्र परिणामों के द्वारा भी चित्त एकाग्र बनता है। सुख की भाँति दुःख भी व्यक्ति को एक ही बिंदु पर चिंतन करने के लिए विवश कर देता है। वास्तव में इसका ध्यान-साधना से कोई संबंध नहीं है।

ध्यान-साधना के लिए तो दो ही मार्ग प्रशस्त थे—धर्म्य-ध्यान और शुक्ल-ध्यान। एक मार्ग था सत्य की खोज का और दूसरा मार्ग था—केवल साधना का। अपनी-अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार इन दोनों पद्धतियों को काम में लिया गया। इन दो मूल स्रोतों के आधार पर नए-नए उपस्रोत बनते गए और साधना करने वालों की नई-नई श्रेणियाँ बनती गई। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भगवान महावीर द्वारा निरूपित और प्रयुक्त ध्यान की परंपरा अब भी अविच्छिन्न है। मध्य काल में उसमें यत्र-तत्र अवरोध उपस्थित हो गए थे। उन अवरोधों के बावजूद उनका नामशेष नहीं हुआ। उसी परंपरा के बीजों को अब पुनः विकसित करने की अपेक्षा है।

ध्यान-परंपरा का विच्छेद क्यों?

मध्यकाल में आ गया, जाने क्यों अवरोध?
असमय ही मुरझा गई, ध्यान-योग की पौध।।
पुनः पल्लवित वह हुई, पाकर साम्य-समीर।
सींचा जब उसको गया, निर्मल निष्ठा-नीर।।
मूल्यांकन फिर से हुआ, ध्यान-योग का स्वस्थ।
सश्रम क्रम खोजा गया, अब है मार्ग प्रशस्त।।

प्रश्न : जैन-शासन में ध्यान की एक महत्त्वपूर्ण परंपरा चल रही थी। उस परंपरा के जीवंत प्रतीक थे—भगवान महावीर। उनके समय में सैकड़ों-सैकड़ों मुनि ध्यान के विशिष्ट साधक थे। उनके उत्तरवर्ती आचार्यों और मुनियों ने भी ध्यान की परंपरा को आगे बढ़ाया। ऐसी स्थिति में वह विशद परंपरा विच्छिन्न-सी क्यों हो गई? उसमें अवरोध क्यों आ गए?

उत्तर : ध्यान-परंपरा में अवरोध तो आया ही है अवरोध के कारणों को समझने से पहले यह तथ्य भी ज्ञातव्य है कि आज बहुत से जै लोग भी नहीं जानते कि उनकी परंपरा में ध्यान का कोई महत्त्व रहा है। इस तथ्य को समझे बिना अवरोध का प्रश्न ही नहीं उठ सकता। क्योंकि जो परंपरा मूल में हो ही नहीं, वह अवरुद्ध कैसे हो सकती है? इसलिए सबसे पहले यह पूर्वधारणा (Hypothysis) बननी चाहिए कि जैन-परंपरा में ध्यान की एक विशद पद्धति रही है। इसके बाद उसमें उपस्थित अवरोधों के संबंध में विमर्श करना है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(२)

अभिनंदन जीवन के प्रभात! अभिवंदन अभिनव पारिजात!
अभिनंदन हे पुलकित प्रवात! अभिवंदन शत-शत शुभ्र प्रात!

फूलों पर खिलता दिव्य हास कलियों पर बिखरी है सुवास
तारों में इठलाता प्रकाश चेतन का हो अपना विकास
विश्वास तुम्हारा फल जाए ढल जाए लंबी शिशिर रात।।

मन के सब जख़्मों को भर दो अनजानी पीड़ा को हर दो
हर पाखी को सुंदर पर दो वीणा को मधुर-मधुर स्वर दो
वर दो आत्मस्थ बनूं सत्वर बहता जाए उजला प्रपात।।

अधरों पर गूंजे विजय गीत अथ से इति तक जीवन पुनीत
संघर्षों में प्रतिपल अभीत दीनों-दुखियों के सहज मीत
घट रीत न जाए इमरत का कर दो जग का अवदात गात।।

तम के तट पर आलोक-दीप भवसागर में हो महाद्वीप
चल सकते कब तुमसे प्रतीप सद्गुण-मुक्ता की दिव्य सीप
नयनों में निरुपम वत्सलता होते जाएं हम अभिस्नात।।

प्राणों के छालों पर मरहम मेरे गीतों की तुम सरगम
मानव-मानव का हरते गम अद्भुत अनुपम है श्रम शम सम
पनघट की प्यासी आहों की सुन सकते तुम ही करुण बात।।

(३)

तुलसी है अभिनव तीर्थधाम।
जग के पुण्यों का फल प्रकाम।।

तुलसी मानव की आशा है पौरुष की नव परिभाषा है
जन-जागृति की अभिलाषा है तुलसी तेजस का अपर नाम।।

तुलसी विकास का मूर्त रूप तुलसी जीवन की छांव-धूप
हर मंजिल पर जो कीर्तिस्तूप तुलसी की गाथा है अनाम।।

तुलसी मानवता का सपूत आध्यात्मिक वैभव है अकूत
तुलसी समता का अग्रदूत गतिशील लक्ष्य हित अविश्राम।।

तुलसी का नाम तितिक्षा है पग-पग पर हुई परीक्षा है
मूल्यों की सही समीक्षा है बन गया सहज ही पूर्णकाम।।

तुलसी औषधि है मंगल है तुलसी पौधा है परिमल है
तुलसी निर्मल गंगाजल है तुलसी कैसी अभिधा ललाम।।

तुलसी रामायण गीता है तुलसी ने मन को जीता है
पगधूलि परम पुनीता है हरती भक्तों का दुःख तमाम।।

तुलसी है महावीर गांधी तुलसी ने मर्यादा बांधी
उखड़ी युग-आस्थाएं सांधी तुलसी में उतरे कृष्ण-राम।।

(क्रमशः)

PDF Compressor Free Version

संबोधि

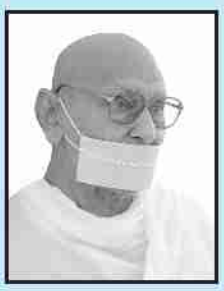

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(७) गर्भान्ते गर्भमायान्ति, लभन्ते जन्म जन्मनः।
मृत्योः मृत्युञ्च गच्छन्ति, दुःखाद् दुःखं व्रजन्ति च।।

(पिछला शेष) आस्तिक सिर्फ आत्म-प्राप्त व्यक्ति की वाणी में आश्वस्त हो जाता है। वह कहता है–'आत्मा है' किंतु स्वाद नहीं चखता। वह धर्म को अच्छा मानता है। धर्म के फल के प्रति आकर्षण होता है और धार्मिक विधि-विधानों का अनुसरण भी करता है। लेकिन धर्म के प्रत्यक्ष दर्शन की कठोरतम साधना पद्धति का अनुगमन नहीं करता और न वह इंद्रिय-विषयों से भी परामुख होता है। इंद्रिय-विषय भी उसे अपनी ओर खींचते हैं और धर्म का आकर्षण भी। धार्मिक जीवन का अर्थ होता है–विषयों के प्रति सर्वथा अनाकर्षण। विषयों का संबंध-विच्छेद नहीं किंतु आसति का विच्छेद। धार्मिक व्यक्ति केवल विषयों से ही विमुख नहीं होता, अपितु कर्म-बंध के स्रोतों के प्रति भी उदासीन होता है। राग-द्वेष और कषाय-चतुष्टय भी उसके तनुतन होते चले जाते हैं। उसके जीवन में अनुकंपा, सहिष्णुता, सौहार्द, सत्यता, सरलता, संतोष, विनम्रता आदि गुण सहज उद्भावित होने लगते हैं। जहाँ जीवन में धर्म का अवतरण नहीं होता, वहाँ उपरोक्त स्थितियों का दर्शन नहीं होता। इससे स्पष्ट अनुमान किया जा सकता है कि धर्म का अभी अंतस्तल से स्पर्श नहीं हुआ है। फिर भी वह धर्म-विहीन नास्तिक व्यक्ति की भाँति क्रूर नहीं होता। धर्म-अधर्म के फल के प्रति उसके मानस में आस्था होती है, लोक-भय होता है।

नास्तिक के लिए आत्मा और धर्म का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। वह मानने और जानने-दोनों से दूर होता है। उसकी आस्था का केंद्र केवल ऐहिक विषय होता है। अर्थ और काम–ये दो ही उसके जीवन के ध्येय होते हैं। वह इन्हीं की परिधि में जीता है और मरता है। ये कैसे संवर्द्धित हों, उसका जीवन इन्हीं के लिए है। इनके संरक्षण और संवर्द्धन में कौशल अर्जन करता है और इनके लिए कृत्य और अकृत्य की मर्यादा के अतिक्रमण में भी वह संकोच नहीं करता। ऐसे व्यक्ति धर्म की दृष्टि से तो अनुपादेय हैं ही किंतु सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से भी कम ग्रहणीय नहीं होते। उपरोक्त श्लोकों में उनकी जीवन-चर्या का ही प्रतिबिंब है।

आत्मा में विश्वास करने वाला व्यक्ति प्रत्येक आत्मा की स्वतंत्रता में विश्वास करता है। उसे सुख प्रिय है तो वह यह भी मानता है कि औरों को भी सुख प्रिय है। इसलिए वह अपने सुख के लिए दूसरों का सुख छीनने में क्रूर नहीं बन सकता।

आजीविका आदि में भी उसका ध्येय रहता है–धर्म-पूर्वक व्यवसाय करना। हिंसा, असत्य आदि का प्रयोग वह जीवन में कम से कम करना चाहेगा। अनात्मवादी की दृष्टि में धर्म कुछ नहीं है, इसलिए सत्कर्म में उसका विश्वास नहीं होता। वह शरीर की भूख को ही शांत करने में व्यस्त रहता है, जिसका परिणाम वर्तमान में किंचित् सुखद हो सकता है किंतु वर्तमान और भविष्य दोनों ही उसके लिए दुःखद बनते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-३ : सम्यक्त्व की प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर : अनंतानुबंधी चतुष्क–क्रोध, मान, माया व लोभ तथा दर्शन मोहनीय के तीन–सम्यक्त्व, मिथ्यात्व व मिश्र–इन सात प्रकृतियों के क्षय, क्षयोपशम या उपशम से सम्यक्त्व प्राप्त होती है।

प्रश्न-४ : सम्यक्त्व के हेतु कितने हैं?

उत्तर : (१) निसर्ग – बिना किसी प्रयत्न के सहज कर्म विलय से जो सम्यक्त्व उपलब्ध होती है, उसे निसर्ग सम्यक्त्व कहते हैं।

(२) अधिगम – उपदेश या किसी बाह्य निमित्त से उपलब्ध सम्यक्त्व अधिगम कहलाती है।

प्रश्न-५ : सम्यक्त्व के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व के पाँच प्रकार हैं–

(१) औपशमिक (२) क्षायिक (३) क्षायोपशमिक
(४) सास्वादन (५) वेदक

(क्रमशः)

उपासना

(भाग – एक)

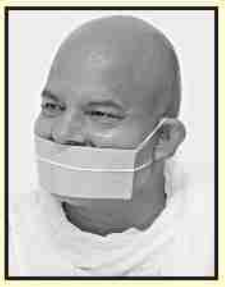

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य शय्यंभव

प्रभव सक्षम आचार्य थे। वे चर्चा-प्रसंग से प्रतिद्वंद्वी शय्यंभव को जैनधर्म के प्रति प्रभावित कर सकते थे। पर उन्हें आचार्य प्रभव के पास ले आने का कार्य सरल न था। धर्मसंधहित की भावना से प्रेरित होकर युगल श्रमण इस कार्य के लिए प्रस्तुत हुए। वे आचार्य प्रभव के आदेशानुसार विद्वान् शय्यंभव के यज्ञवाट में गए। उन्होंने द्वार पर उपस्थित होकर धर्म लाभ कहा। वहाँ श्रमणों का घोर अपमान हुआ और उन्हें बाहर निकालने का उपक्रम चला। श्रमण बोले–**'अहो कष्टमहो कष्टं तत्त्वं विज्ञायते नहि'** अहो! खेद की बात है, तत्त्व नहीं जाना जा रहा है।

तत्त्व को नहीं जानने की बात महाभिमानी उद्भट विद्वान् शय्यंभव के मस्तिष्क से टकराई। सोचा, ये उपशांत तपस्वी झूठ नहीं बोलते। बस, हाथ में तलवार लेकर वे अध्यापक के पास गए और तत्त्व का स्वरूप पूछा। उपाध्याय ने कहा–'स्वर्ग और अपवर्ग को प्रदान करने वाले वेद ही परम तत्त्व हैं।' शय्यंभव बोले–'वीतद्वेष, वीतराग, निर्मम, निष्परिग्रही, शांत महर्षि अवितथ भाषण नहीं करते, अतः यथावस्थित तत्त्व का प्रतिपादन करें। अन्यथा इस तलवार से शिरश्छेद कर दूँगा।' लपलपाती तलवार को देखकर उपाध्याय काँप उठे और कहा–'अर्हत्-धर्म ही यथार्थ तत्त्व है।'

विद्वान् शय्यंभव महाभिमानी होते हुए भी सच्चे जिज्ञासु थे। यज्ञ-सामग्री अध्यापक को संभलाकर श्रमणों की खोज में निकले और एक दिन आचार्य प्रभव के पास पहुँच गए। प्रभव ने उन्हें यज्ञ का यथार्थ स्वरूप समझाया। अध्यात्म की विशद भूमिका पर जीवन-दर्शन का चित्र प्रस्तुत किया। आचार्य प्रभव की पीयूषस्रावी वाणी से बोध प्राप्त कर शय्यंभव वी०नि० ६४ (वि०पू० ४०६) में श्रमण-संघ में प्रविष्ट हुए। मुनि-जीवन ग्रहण के समय उनकी उम्र अट्ठाईस वर्ष की थी।

वे वैदिक दर्शन के धुरंधर विद्वान् पहले से ही थे। आचार्य प्रभव के पास उन्होंने चौदह पूर्वों का ज्ञान प्राप्त किया और श्रुतधर की परंपरा में वे द्वितीय श्रुतकेवली बने।

श्रुतसंपन्न शय्यंभव को अपना ही दूसरा प्रतिबिंब मानते हुए आचार्य प्रभव ने उन्हें वी०नि० ७५ (वि०पू० ३९५) में आचार्य पद से अलंकृत किया।

ब्राह्मण विद्वान् का श्रमण-संघ में प्रविष्ट हो जाना उस युग की एक विशेष घटना थी। शय्यंभव जब दीक्षित हुए तब उनकी नवयुवती पत्नी गर्भवती थी। ब्राह्मण वर्ग में चर्चा प्रारंभ हुई–

अहो शय्यंभवो भट्टो निष्ठुरेभ्योऽपि निष्ठुरः।
स्वां प्रियां यौवनवतीं सुशीलामपि योऽत्यजत्।।

विद्वान् शय्यंभव भट्ट निष्ठुरातिनिष्ठुर व्यक्ति है, जिसने अपनी युवती पत्नी का परित्याग कर दिया है। साधु बन गया है। नारी के लिए पति के अभाव में पुत्र ही आलंबन होता है। वह भी उसके नहीं हैं। अबला भट्ट-पत्नी कैसे अपने जीवन का निर्वाह करेगी? स्त्रियाँ उससे पूछतीं–'बहिन, गर्भ की संभावना है?' वह संकोच करती हुई कहती–'मणयं' यह मणयं शब्द संस्कृत के मनाक् शब्द का परिवर्तित रूप है, जो सत्त्व का बोध करा रहा था, कुछ होने का संकेत दे रहा था। भट्ट-पत्नी के इस छोटे-से उत्तर से परिवार वालों को संतोष मिला। एक दिन भट्ट-पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया। पुत्र का नाम माता द्वारा उच्चारित मणयं की ध्वनि के आधार पर मनक रखा गया। भट्ट-पत्नी ने मनक का अत्यंत स्नेह से पालन किया। बालक आठ वर्ष का हुआ। उसने अपनी माँ से पूछा–'जननी! मेरे पिता का नाम क्या है?' भट्ट-पत्नी ने पुत्र के प्रश्न पर समग्र पूर्व वृत्तांत सुनाते हुए बताया–'तुम्हारे पिता जैन मुनि बन गए हैं।' पितृ-दर्शन की भावना बालक में जगी। माता का आदेश ले वह स्वयं भट्ट की खोज में निकला। पिता-पुत्र का चंपा में अचानक मिलन हुआ। अपनी मुखाकृति से मिलती मनक की मुखमुद्रा पर आचार्य शय्यंभव की दृष्टि केंद्रित हो गई। अज्ञात स्नेह हृदय में उमड़ पड़ा। उन्होंने बालक के नाम, गाँव आदि के विषय में पूछा। अपना परिचय देता हुआ मनक बोला–'मेरे पिता आचार्य शय्यंभव मुनि कहाँ हैं? क्या आप उन्हें जानते हैं?' बालक के मुख से अपना नाम सुनकर आचार्य शय्यंभव ने पुत्र को पहचान लिया और अपने को आचार्य शय्यंभव का अभिन्न मित्र बताते हुए उसे अध्यात्म-बोध दिया। बाल्यकाल के सरल मानस में संस्कारों का ग्रहण बहुत शीघ्र होता है। आचार्य शय्यंभव का प्रेरणा भरा उपदेश सुन मानक प्रभावित हुआ और आठवर्ष की अवस्था में उनके पास मुनि बन गया।

(क्रमशः)

PDF Compressor Free Version

✦ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०२वें जन्म दिवस समारोह के आयोजन

अध्यात्म के महासूर्य थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

उज्जैन

साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १०२वीं जन्म जयंती पटेल निवास में मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ सोनाली पूजा पीपाड़ा के मंगल गीत से हुआ।

साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी तुलसी युग के महान भाष्यकार थे। नए युग के नए कैनवास पर नए चित्र को अंकित करने वाले थे—आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी। साध्वीश्री जी ने छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व और कर्तव्य को प्रस्तुत किया। साध्वी शांतिलता जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी अलौकिक प्रज्ञा के शलाका पुरुष थे।

साध्वी पूनमप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी उस शख्स का नाम है जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को सात समुद्र पार पहुँचाया। साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मुझ जैसी अनगढ़ पत्थर को मूर्ति का रूप दिया।

तेयुप अध्यक्ष मधुर आच्छा ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व को समझना दुरुह है। महिला मंडल अध्यक्षा वीरबाला छाजेड़ ने कहा कि उनके दिए हुए अवदानों का लाभ उठाएँगे तभी जयंती मनाना सार्थक होगा। हमें संबोधि ग्रंथ का स्वाध्याय करना चाहिए।

ईश्वर पटेल ने कहा कि महाप्रज्ञ तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। पीपाड़ा परिवार के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सुंदर नाटिका के माध्यम से त्याग की केक समर्पित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी पूनमप्रभा जी ने किया।

सिकंदराबाद

साध्वी काव्यलता जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के १०२वें जन्म दिवस पर अपने उद्बोधन में कहा—प्रज्ञा दिवस पर हम प्रज्ञा पुरुष के अवदानों का स्मरण करते हैं। महाप्रज्ञ जी ने अपनी ज्ञान रूपी रश्मियों से इस धरा को आलोकित किया। आज विश्व कोरोना जैसी महामारी से भयाक्रांत है, उस प्रज्ञा पुरुष ने अपनी निर्मल प्रज्ञा से विश्व शांति को अनेक सूत्र दिया और भविष्य में होने वाले घटनाक्रम को भी अपने प्रवचन के माध्यम से विश्व व्यापी बनाया। साध्वीश्री जी ने युग पुरुष के अवदानों की चर्चा की।

पेगा कॉलोनी की बहनें—अमिता, श्वेता, नीलम के मधुर स्वरों से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा ने जीवन विज्ञान के अवदान पर विशेष बल देते हुए अपने आराध्य की यशोगाथा की सुंदर अभिव्यक्ति दी। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी ने प्रज्ञा के समंदर के विविध पहलुओं पर श्रद्धा समर्पित की। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद ने योगी पुरुष को अभिवंदना की।

तेयुप अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, कार्यकर्ता नवीन लुणिया ने जन-जन आस्था धाम के रूप में युवा शक्ति की ओर से अभिवंदना की। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम पारख ने अपने महिला समूह के साथ मनमोहक गीत की सुंदर प्रस्तुति से सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह में टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित ने अपने गुरु उपकार पर गर्व व्यक्त किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, सुमधुर गायक इंद्रचंद सेठिया आदि ने अपनी श्रद्धा समर्पित की।

प्रकाश दफ्तरी ने साध्वीश्री जी एवं आगंतुकों का स्वागत किया। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर गीत एवं साध्वी ज्योतियशा जी ने मंच संचालन किया।

विशेष समारोह में हिंदी मिलाप पत्र को सब-एडिटर सरिता जैन ने 'महाप्रज्ञ' के दर्शन को जीवन दर्शन बनाकर अपने जीवन को स्वस्थ एवं तनावमुक्त बनाने की औषध प्रेक्षाध्यान पर विशेष चर्चा की। तेरापंथ सभा द्वारा सरिता बैद का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

मानसरोवर, सिकंदराबाद

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०२वाँ जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल की बहनों के संगान से हुआ। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि बीसवीं सदी में जन्म लेने वाला एक मूर्धन्य व्यक्तित्व है—आचार्य महाप्रज्ञ। उनका जीवन अनेक विशेषताओं का समवाय था। वे विश्व के महान संत, ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी, उच्च कोटि के दार्शनिक, महान साहित्य-स्रष्टा और युगीन समस्याओं के समाधायक पुरुष थे।

मानसरोवर महिला मंडल ने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मार्दवयश जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से भावों की प्रस्तुति दी। उपाध्यक्ष सरला जैन ने कविता की प्रस्तुति दी। साध्वी धवलप्रभा जी ने कविता के माध्यम से भावाभिव्यक्ति दी। केसरीमल छाजेड़ ने अपने जीवंत प्रेरक प्रसंग बताए। हैदराबाद, महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मधुरयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञजी के जीवन पर प्रकाश डाला। रेणु बैंगानी, पूर्व अध्यक्ष सरल सुराना, युवक परिषद के उपाध्यक्ष प्रकाश बोथरा, ज्ञानशाला की आंचलिक प्रभारी, अंजु बैद, टीपीएफ के कोषाध्यक्ष पंकज संचेती, प्रीति नाहटा और सुमधुर गायक नवनीत और नवीन छाजेड़ ने गीत की प्रस्तुति दी। रेणु बैंगानी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी श्वेतप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तारानगर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०२वाँ जन्म दिवस शासनश्री साध्वी प्रसमरति जी के सान्निध्य में प्रज्ञा दिवस पर आयोजित 'तुलसी के महाप्रज्ञ' भक्तिमय भजनों के कार्यक्रम से हुआ। अध्यक्षीय वक्तव्य सभा अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा द्वारा किया गया। साध्वी चंद्रयशा जी, साध्वी कारुण्यप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० ललितरेखा जी की मंत्रमुग्ध गीतिका एवं मोहनलाल सुराणा, कमला देवी कोठारी, तारादेवी सुराणा, हितेश सुराणा, विनोद बोथरा, हर्षिता बोथरा, कंचन देवी बरड़िया, गुलाब देवी सुराणा, अनामिका जैन एवं दिव्या जैन द्वारा गीत गायन से सदन महाप्रज्ञमयी हो गया।

शासनश्री साध्वी प्रसमरति जी ने परम पावन गुरुदेव के अनेकों तेजस्वी अवदानों के बारे में बताया। कार्यक्रम में समाज की अच्छी उपस्थिति रही। साथ ही कार्यक्रम को फेसबुक पर लाइव दिखाया गया। कार्यक्रम का संयोजन मोना चोरड़िया ने किया। साध्वीश्री जी के मुखारविंद से मंगलपाठ के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मलकपेट, हैदराबाद

साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वी पुण्यस्मिता म०सा० व साध्वी प्रणिधि म० सा० के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०२वाँ जन्म दिवस श्रद्धा के साथ मनया गया। मलकपेट के सुराणा भवन के सभागार में आयोजित प्रज्ञा दिवस में उपस्थित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ भारतीय ऋषि परंपरा के गौरव पुरुष थे। उनकी विलक्षण विशेषताओं की व्याख्या चंद शब्दों में नहीं हो सकती। उन्हें अनेक साहित्य में पढ़ा जा सकता है। उनकी ध्यान पद्धति को सीखकर समझा जा सकता है। वे गहन दर्शन को भी सरल भाषा में समझाकर जनभोग्य बनाने में माहिर थे।

साध्वी प्रणिधि म०सा० ने आचार्य महाप्रज्ञजी के गुणानुवाद करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जैन शासन के तेजस्वी सूर्य थे। वे एक आशु कवि, कुशल प्रवचनकार। वे वंदनीय, अनुमोदनीय व अनुकरणीय महामानव थे। हमें आज उनके गुणानुवाद का मौका मिला, इसके लिए मैं मातृतुल्य साध्वी निर्वाणश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी में प्रकांड विद्वता की हिमालयी ऊँचाई थी तो अद्भुत समर्पण की सागर सी गहराई थी। वे समता की प्रतिमूर्ति थे, अनुशासन के पक्षधर थे।

साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी ने सुमधुर प्रस्तुति दी। अपने भावों की अभिव्यक्ति में तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, तेरापंथ सभा, हैदराबाद के उपाध्यक्ष दिलीप डागा, महिला मंडल की सहमंत्री कविता आच्छा, तेयुप के सहमंत्री प्रमोद भंडारी, टीपीएफ के मंत्री सुनील पगारिया, रामकोट से श्रमण संघ के अध्यक्ष किशोर मूथा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ मलकपेट ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्नों के 'महाप्रज्ञ अष्टक' के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम की समायोजना में मलकपेट तेरापंथ समाज व श्रीसंघ का भी सहयोग रहा।

चेन्नई

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०२वाँ जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ जैन तेरापंथ पब्लिक स्कूल में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी प्रज्ञा के बेताज बादशाह थे। उनके मस्तिष्क में दुर्लभ ज्ञानमणियाँ थीं। उनकी नजरों में नेह का निर्झर प्रवाह होता था। उनकी साधना में सूर्य सी तेजस्विता थी। उनके आभामंडल में शशि जैसी शीतलता थी। उनके विचारों में, चिंतन में सागर की गहराई थी। उनके चारित्र में हिमालय जैसी ऊँचाई थी। उनके जीवन में निर्झर जैसी गतिशीलता थी।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे महायोगी थे, जिन्होंने योग की साधना कर अयोग की दिशा में महाप्रस्थान किया। साध्वी समत्वयशा जी ने मंच संचालन किया। तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़, महिला मंडल अध्यक्षा शांति दुधोड़िया, तेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश नवलखा, टीपीएफ के चीफ ट्रस्टी एम०सी० बलदोटा, कैलाश गोयल, मुकेश रांका, ताराचंद आंचलिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। सुभद्रा लुणावत ने कन्या मंडल के साथ महाप्रज्ञ अष्टकम की प्रस्तुति दी। मंगलाचरण संगीता बाफना व शोभा भंसाली ने किया। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने अपने आराध्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अभिवंदना में त्याग-प्रत्याख्यान के माध्यम से अभ्यर्थना की।

चंडीगढ़

आचार्य महाप्रज्ञ जी 'एक जीवित किंवदंती' केवल एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि एक उद्देश्य भी है, वह वह धारणा है जो समय या क्षेत्र से बंधी नहीं हो सकती। लोकप्रिय रूप से मोबाइल विश्वकोश' के रूप में जाना जाने वाला, अनंत ज्ञान का खजाना था। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के १०२वें जन्म दिवस पर कहे। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के कर्तव्य का मूल्यांकन करते हुए आपको आचार्य तुलसी द्वारा सन् १९४४ में अग्रगण्य बनाया गया। आपकी निर्मल प्रज्ञा से संघ, देश, विश्व लाभान्वित हुए।

मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर सहित अनेक बुद्धिजीवियों ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को भारत का दूसरे विवेकानंद करार दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे दार्शनिक और क्रांतिकारी संत थे, जिन्होंने अपने अनुपम, अद्भुत और अद्वितीय विचारों से समाज का मार्गदर्शन किया, साथ ही अनेक आध्यात्मिक रहस्यों से पर्दा उठाया।

वैक्सीनेशन के अंतर्गत टीकाकरण का आयोजन

विरार, मंबई।

मुंबई सभा का अणुव्रत वैक्सीनेशन अभियान के तहत मुंबई के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे अणुव्रत वैक्सीनेशन अभियान की शृंखला में विरार तेरापंथ सभा द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में ५५ सदस्यों का निःशुल्क वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन किया गया।

विरार संघनिष्ठ सभा अध्यक्ष तेजराज हिरण, मंत्री अजयराज फूलफगर, बाबूलाल मेहता एवं तेयुप (शिशोदा), अध्यक्ष हेमंत धाकड़ एवं अभातेयुप जेटीएन प्रतिनिधि विकास धाकड़ आदि के नेतृत्व में श्रावक सुनील डूंगरवाल एवं सुनील इंटोड़िया के विशेष प्रयत्न से लगातार वसई विरार नगरपालिका से संपर्क करते हुए समाज के हर वर्ग का वैक्सीनेशन किया गया।

इस अवसर पर कैंप का आयोजन करने पर मुंबई सभा टीम द्वारा स्थानीय पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ता को साधुवाद एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

✦ जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।
– आचार्यश्री महाश्रमण

PDF Compressor Free Version

महिला मंडल के विविध आयोजन

साधारण सभा का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में न्यू तेरापंथ भवन में साधारण सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल ने अपने अंतिम अध्यक्षीय भाषण में सभी बहनों का स्वागत किया एवं सभी का आभार ज्ञापन किया तथा सभी से क्षमायाचना की।

मंत्री रानी बाफना ने मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा अपने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष उर्मिला सालेचा ने संविधान वाचन किया। कोषाध्यक्ष निर्मला संकलेचा ने दो साल का आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया। प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा ने अपने अनुभव व्यक्त किए। कन्या मंडल संयोजिका विधि भंसाली ने अपने दो साल के कार्यक्रम की प्रस्तुति की।

इस अवसर पर लगभग १२ बड़ी बहनों को सेवा आदि के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। अध्यक्ष के साथ पूरी पदाधिकारी टीम और कार्यसमिति सभी ने अपने पद का विसर्जन किया। इसके पश्चात चुनाव अधिकारी विमला लुंकड़ के नेतृत्व में मनाव के द्वारा निर्विरोध रूप से निर्मला संकलेचा को २०२१-२३ के कार्यकाल के लिए अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। जिन बहनों ने तत्त्वज्ञान के ६ भाग की एग्जाम कंप्लीट की उनको गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संरक्षक नारायण देवी छाजेड़, परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल, देवी बाई छाजेड़, उपाध्यक्ष चंद्र बालड आदि लगभग १२० बहनें उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री संगीता बोथरा ने किया। साध्वी प्रमोदश्री जी और साध्वी मंजुयशा जी ने मंगलपाठ सुनाया।

सास-बहू कॉम्बो प्रतियोगिता

राउरकेला।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं ने सास-बहू कॉम्बो प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें कई सास-बहुओं की जोड़ी ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर कनक बोथरा और उनकी बहू मीनाक्षी बोथरा रहीं तथा द्वितीय स्थान पर किरण देवी भंसाली और उनकी बहू ललिता भंसाली रहीं। सभी ने सुंदर सेल्फी के साथ कविता भेजी। ये अपने आपमें एक रोचक प्रतियोगिता रही, जिसने सास-बहू के रिश्ते को और प्रगाढ़ बना दिया। प्रतियोगिता का निर्णय सरोज गोलछा ने किया।

वार्षिक साधारण सभा

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा मंडल अध्यक्ष मंजू देवी भंसाली की अध्यक्षता में चुनाव मनाव का कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से वर्ष २०२१-२३ के लिए सोहनी देवी सालेचा को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। इससे पूर्व मंत्री ममता मेहता द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन और कोषाध्यक्ष द्वारा वार्षिक आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया गया। चुनाव अधिकारी मोहनी देवी संकलेचा के निर्देशन में चुनाव मनाव पद्धति से किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से सोहनी देवी सालेचा को वर्ष २०२१-२३ के लिए जसोल तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

मंडल अध्यक्ष मंजू देवी भंसाली सहित सभी पदाधिकारी ने चुनाव अधिकारी की उपस्थिति में अपने पद का विसर्जन किया। इसके साथ ही तेरापंथ कन्या मंडल, जसोल के भी चुनाव-मनाव में सर्वसम्मति से कोमल श्रीश्रीमाल को कन्या मंडल की संयोजिका मनोनीत किया गया।

जल शुद्धिकरण मशीन भेंट

राजाराजेश्वरी नगर।

तेममं द्वारा अभातेममं निर्देशित 'तृप्ति-एक बूंद जल है तो कल है' योजना के अंतर्गत सरोज आर बैद की अध्यक्षता में बी०बी० एम०पी० बस डिपो में एक वाटर प्यूरीफायर मंडल द्वारा भेंट किया गया। डिपो के महिला कर्मचारी भवन में यह जल शुद्धिकरण संयत्र दिया गया।

बस डिपो के डिप्टी मैनेजर मल्लिकार्जुन ने मंडल के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि तेममं समाज सेवा के बहुत ही अच्छे कार्य कर रही है। पहले भी हमारी महिला कर्मचारियों के स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु पैड डिस्पोजल मशीन भेंट की गई थी। अध्यक्ष सरोज आर बैद ने कहा कि स्वच्छ जल सबकी आवश्यकता, सबका अधिकार है। पूर्व में भी ११ स्टील फिल्टर का वितरण किया था। डिपो के कर्मचारियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। इंचार्ज शोभा ने राजाराजेश्वरी नगर के विभिन्न सरकारी महकमों में मंडल द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की।

उपाध्यक्ष लता बाफना, मंत्री शोभा बोथरा, सहमंत्री मंजु बोथरा, कार्यकारिणी सदस्य कंचन नाहर, शारदा बैद की गरिमामय उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी आदि के सान्निध्य में विल्लुपुरम महिला मंडल ने शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया। निवर्तमान मंजू सेठिया ने शपथ ग्रहण करवाई। महिला मंडल की नवनिर्वाचित सदस्याओं द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया। विल्लुपुरम महिला मंडल द्वारा साधारण सभा का आयोजन किया। जिसमें २ वर्षीय आय-व्यय का ब्योरा सुनाया गया। मनाव से चुनाव संपन्न कराए गए। जिसमें सभी की सहमति से २०२१-२०२३ के लिए राखी सुराणा को अध्यक्ष पद और स्नेहा भंडारी को मंत्री पद के लिए मनोनीत किया गया। नव मनोनीत अध्यक्ष ने अपनी पूरी टीम की घोषणा की। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने प्रेरक उद्बोधन देते हुए मंगलपाठ सुनाया।

महिला मंडल सम्मान समारोह

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल का सम्मान समारोह डी०वी० कॉलोनी, तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अंजू बैंगाणी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंडल की बहनों मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष प्रेम पारख ने स्वागत वक्तव्य दिया। साल भर में सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं का सम्मान किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर नारी लोक प्रश्नोत्तरी में जिन्होंने भी स्थान प्राप्त किया उनका भी सम्मान किया गया। मीनाक्षी सुराणा का जूम संचालन के लिए, सुप्रिया बैद का कोरियोग्राफी के लिए, शिल्पा सुराणा का चातुर्मास में चौका व्यवस्था में सहयोग के लिए, मोनिका भंसाली, कन्या मंडल की संयोजिका पायल सुराणा व सह-संयोजिका मोक्षा सुराणा, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यों का सम्मान किया गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरला पी० भूतोड़िया का प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

मंजू सुराणा ने नारी उत्थान पर एक मधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अंजू चोरड़िया, सहमंत्री कविता आच्छा, अंजू बैंगाणी ने किया। कार्यक्रम का समापन मंत्री अंजू चोरड़िया के आभार से हुआ।

साधारण सभा का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के निर्देशन में महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में साधारण सभा का आयोजन हुआ। जिसमें मान-मनुहार प्रक्रिया से ललिता पारख को सर्वसम्मति से वर्ष २०२१-२३ के लिए अध्यक्षा मनोनीत किया गया। अध्यक्ष कुसुम बोथरा, मंत्री चंद्रकला कोठारी, परामर्शक सरला कोठरी व महिला मंडल की पूरी टीम की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, ज्ञानचंद कोठारी, गौतम ढेलड़िया, भगवती परमार, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार व कांतिलाल सिंघवी ने भी नव मनोनीत अध्यक्ष को अपनी शुभकामनाएँ एवं निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम बोथरा को सफलतम कार्यकाल के लिए बधाई, मंगलकामनाएँ प्रेषित की। मुस्कान सिंघवी को कन्या मंडल संयोजिका का दायित्व सौंपा गया। कार्यक्रम में महिला मंडल की विशेष उपस्थिति रही।

चारित्रात्माओं का मिलन मन से मन का होता है

अहमदाबाद।

जुल्ली टेनामेंट, शाहीबाग में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी एवं शासनश्री साध्वी सरस्वती जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मंगलाचरण प्रवीणा बुरड़ ने सुमधुर गीत द्वारा किया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि अपनी यात्रा में जो अनुभव, पुरानी यादें आध्यात्मिक मिलन के अवसर पर वह संस्मरणों को याद करते हैं तो बहुत आनंद व रस आता है। आज यह अवसर मिला है। उन्होंने आगे कहा कि अहमदाबाद के श्रद्धालु श्रावक समाज व सभी संस्थाएँ अपनी शक्तियों के साथ संघ के विकास में हमेशा प्रयत्नशील हैं।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि हम एक समंदर के मोती हैं, एक ही दीप की ज्योति हैं, एक डाली के फूल हैं। फिर भी कभी-कभी ज्यादा नजदीक होते हुए भी उनका मिलन देरी से होता है। अहमदाबाद के विभिन्न क्षेत्रों की लघुयात्रा करके शाहीबाग आए और साध्वीश्री से मिलकर आनंद की अनुभूति हुई।

साध्वी हिमश्री जी ने साध्वीवृंद का स्वागत करते हुए कहा कि आध्यात्मिक मिलन का दृश्य, अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था के साथ प्रमोदभाव, विनय, श्रद्धा, समर्पण का प्रयोग रूप भिक्षु शासन में ही देखने को मिल सकता है। यह गुण सबके लिए प्रेरणादायी होते हैं। साध्वी हिमश्री जी, साध्वी मुक्तियशा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने साध्वीवृंद का गुणगान करते हुए स्वागत गीत का संगान किया। शासनश्री साध्वी रमावती जी ने कहा कि यह मिलन कोई औपचारिकता का मिलन नहीं होता, चारित्रात्माओं का मिलन मन से मन का मिलन होता है। साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि हमारा मिलन दिल से दिल का हृदय से मिलन होता है, साध्वियाँ जब आपस में मिलते हैं तब मन मयूर नाच उठता है। सहवर्ती साध्वियों के साथ शुभकामना गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा निवर्तमान अध्यक्ष नरेंद्र सुराणा, तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा आदि ने स्वागत करते हुए मिलन को मनोरम, दुर्लभ एवं प्रेरणादायक बताते हुए विचार रखे। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। तेरापंथी सभा सहमंत्री जितेंद्र छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अणुव्रत जीवनशैली का प्रचार-प्रसार एवं सेवा कार्य

हावड़ा।

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में अणुव्रत समिति द्वारा महामारी व लॉकडाउन के समय शिवा अनाथ आश्रम उत्तरपाड़ा हावड़ा में अणुव्रत जीवनशैली प्रचार-प्रसार एवं बच्चों को भोजन वितरण किया गया। सर्वप्रथम सभी साथियों ने सामुहिक नमस्कार महामंत्र का जाप किया। तत्पश्चात अणुव्रत समिति के सदस्यों ने उपस्थित सभी अनाथ आश्रम के बच्चों को कहा कि कोरोना जैसे महामारी में अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम अपनाकर जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज कुमार सिंघी, मंत्री राजेश कुमार बोहरा, सहमंत्री दीपक नखत, प्रचार-प्रसार मंत्री राकेश धारीवाल, सदस्य रणजीत लुणिया एवं अनाथ आश्रम के व्यवस्थापक सीताराम सिंह उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के संयोजक उपाध्यक्ष प्रथम अजीत बैद रहे।

✦ अहिंसा की साधना के लिए अपेक्षित है व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण का प्रयास करे।
— आचार्यश्री महाश्रमण

PDF Compressor Free Version

✦ क्रोध दुर्बलता है। सामर्थ्य होते हुए भी नहीं मारना अहिंसा की साधना है। सक्षम होते हुए भी क्षमा करना बड़प्पन होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

दुख मुक्ति का उपाय है राग-द्वेष मुक्त होना : आचार्यश्री महाश्रमण

चित्तौड़गढ़, ११ जुलाई, २०२१

तेरापंथ के महाराणा, धर्मोद्योतकर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः महाराणा प्रताप की नगरी चित्तौड़गढ़ पधारे। महाराणा प्रताप का किला यही चित्तौड़गढ़ में अवस्थित है। चित्तौड़गढ़ मेवाड़ का प्रवेश द्वार है। चित्तौड़गढ़ तेरापंथ के इतिहास से जुड़ा है, तो तेरापंथ के आचार्यों से भी जुड़ा है।

अंतर्यामी-शांतिदूत ने मंगल पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि एक प्रश्न उठाया गया कि ऐसा कौन सा कर्म है, कार्य है, जिसको करके मैं दुर्गति को प्राप्त न होऊँ। क्योंकि मैं संसारी जीव हूँ। संसार में हूँ और संसार भी अध्रुव है, अशाश्वत है। एक जीवन कोई शाश्वत-ध्रुव नहीं है।

मनुष्य है, हमेशा मनुष्य रहेगा, ऐसा नहीं। चाहे देवता, नरक, तिर्यन्च कोई भी हो, किसी भी प्राणी का जीवन शाश्वत नहीं है। त्रैकालिक होना और शाश्वत होना, उसी जीवन का बना रहना संभव नहीं और जिस रूप में है, जैसे आदमी बच्चा है, तो हमेशा बच्चा बना रहेगा यह भी नहीं। बचपन के बाद यौवन वार्ध्यक आ सकता है।

यह संसार जिसके लिए शास्त्रकार ने दो शब्दों का प्रयोग किया है—अध्रुव है, अशाश्वत है। तीसरा विश्लेषण है—दुःख प्रचुर है। संसार में दुःख बहुत होते हैं। सुख भी होते हैं। परंतु जीवन में प्रतिकूलता-आपदा की स्थितियाँ भी आ सकती हैं। जीवन का समापन भी सुनिश्चित है, ऐसा ये संसार है।

आदमी की मृत्यु होगी यह निश्चित है, परंतु कब होगी, कहाँ होगी यह कुछ अनिश्चित हमारे लिए हो सकती है। क्या करूँ कि इस जीवन के बाद दुर्गति में न जाना पड़े। उत्तर दिया गया—दुःख मुक्ति का उपाय है—राग-मुक्त होना, राग को छोड़ वीतराग बन जाना। जो साधु बनता है, वो मानो राग-मुक्ति की साधना में अग्रसर हो जाता है।

हर पाप की जड़ में यह राग बैठा है। राग क्षीण हो जाए, कम हो जाए, फिर कोई आदमी पाप नहीं कर सकता है। दुःख है तो दुःख मुक्ति भी संसार में है। राग है तो शारीरिक, मानसिक कई दुःख पैदा हो सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने फरमाया था कि समस्या और दुःख एक नहीं है। समस्याएँ हैं, पर आदमी मानसिक स्तर पर प्रसन्न रह सकता है। शांति में रह सकता है।

हम समस्या से जितना ज्यादा पलायन करते हैं, समस्या किसी संदर्भ में उतनी ही हावी हो सकती है। भागो मत, समस्या से घबराओ मत। समस्या को देखो, सावधानी रखे, जो करना है, सो करो पर डरो मत। जो समस्या से डरता है, उसको समस्या किसी संदर्भ में डराने वाली बन सकती है। समस्या से मैत्री-प्रसन्नता का भाव है तो फिर संभव है, समस्या ज्यादा तकलीफ न दे।

मैत्री बुढ़ापे के साथ, मैत्री बीमारी के साथ और मैत्री और समस्याओं के साथ हो जाती है, फिर आदमी भागता नहीं—डरता भी नहीं है। समाधान का प्रयास हो सकता है। जब तक समस्या-भय की स्थिति सामने आए नहीं तब तक डरना हो तो डर लो, पर समस्या की स्थिति सामने आ जाए तब मत डरो, प्रतिकार करने पर ध्यान दो।

समस्या कहीं भी किसी तरह आ जाए, किसी समस्या के होने पर अंदर से व्यथित मत बनो। तनाव मत करो, समता-शांति रखो। समस्या को ध्यान से देखो। समस्या का स्तर क्या है, समस्या में गहराई कितनी है? अच्छी तरह जानकर समस्या का समाधान करो।

दो वृत्तियाँ होती हैं—सेंहही वृत्ति और श्वानी वृत्ति। कुत्ते पर ढेला फैंकेंगे तो कुत्ता ढेले को देखेगा, चाटेगा, उसकी सोच उतनी ही है। शेर की ओर कोई बाण फैंको तो शेर बाण को नहीं, बाण फैंकने वाले को देखेगा। वो मूल पर जाने का प्रयास करेगा। जो व्यक्ति समस्या को गहराई से देखने की वृत्ति प्राप्त कर लेता है, उसके लिए उस समस्या का समाधान कुछ आसान हो सकता है।

समाधान का आधार है, समस्या का सही ज्ञान होना। शास्त्रकार ने बताया है कि ये संसार दुःख प्रचुर है, अशाश्वत-अध्रुव है। कौन सा कर्म करूँ जिसके द्वारा मैं दुर्गति में जाने से बच जाऊँ। दुःख है, दुःखमुक्ति का उपाय है, यह एक प्रसंग से समझाया। बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु दुःख है। अहो! संसार में कितने दुःख हैं। त्याग-संयम, भोगों को छोड़ देना दुःख मुक्ति का उपाय है। हम इस उपाय को काम में लेते रहें तो आशा की जा सकती है कि दुःख मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

आज राजस्थान के इस मेवाड़ संभाग के चित्तौड़गढ़ में आना हुआ है। पहले भी आना हुआ था। यहाँ के जैन-अजैन लोगों में खूब अच्छी भावना रहे। अब एकदम मेवाड़ दिखने लग गया है। अब मेवाड़ में लंबा प्रवास है। मुनि मोहजीत कुमार जी व मुनि रश्मि कुमार जी से आज मिलना हो गया है। मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' एवं मुनि सुखलाल जी स्वामी जो कुछ समय पहले दिवंगत हो गए उनके बारे में फरमाया। सहवर्ती संतों को भी शिक्षाएँ फरमाईं।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि जो महापुरुष होते हैं, वे घूम-घूमकर लोगों का संताप दूर करते हैं। आचार्यप्रवर ने सात वर्ष में १५-१६ हजार किमी की यात्रा की है। जहाँ-जहाँ पूज्यप्रवर पधारते हैं, गाँव के लोगों में उल्लास छा जाता है।

मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी, मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी ने अपने मनोभाव पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित किए। बाल मुनियों की भावना वास्तव में अनुमोदनीय थी। ऐसा विकास तेरापंथ में ही संभव हो सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में स्थानीय विधायक चंद्रभान, वरिष्ठ कांग्रेस सदस्य सुरेंद्र सिंह झालावत, सभापति नगर परिषद संदीप शर्मा, तेरापंथ सभा के मंत्री भूपेंद्र भुतावत, दिगंबर समाज से महेंद्र टोंगिया, महावीर मंडल से कमल बीकानेरिया, महिला मंडल, बी०एल० खाब्या, टीपीएफ अध्यक्षा प्रियंका ढिलीवाल, सुनील ढिलीवाल, बीजेएस से हितैष श्रीश्रीमाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सुखी बनने का महत्त्वपूर्ण सूत्र है स्वयं पर संयम : आचार्यश्री महाश्रमण

गंगरार, १४ जुलाई, २०२१

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १३ किमी का विहार कर गंगरार पधारे। आचार्यप्रवर ने मंगल प्रवचन में फरमाया कि भगवान महावीर ने गौतम आदि संतों से प्रश्न किया कि बताओ साधुओ, आयुष्मन श्रमणो! प्राणियों को भय किस चीज का लगता है। संत उत्तर नहीं दे सके। भगवान ने समाधान देते हुए फरमाया कि प्राणी दुःख से डरते हैं।

फिर प्रश्न हुआ—दुःख पैदा किसने किया? उत्तर है—इस जीव ने ही अपने प्रमाद से दुःख पैदा किया है। फिर प्रश्न कि ये दुःख वैदिक कैसे हो जाए? अप्रमाद से दुःख से छुटकारा मिल सकता है। आगम में ही बताया गया है कि दुःख-मुक्ति का मार्ग है—अपने आपका अभिनिग्रह करो। अपने आप पर संयम, नियंत्रण करो।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है—जो आत्मा दमन-शमन करता है, वो इस लोक में सुखी बनता है, आगे भी सुखी बनता है। दूसरों पर अभिनिग्रह करने से दुःख से छुटकारा पाने का मूल उपाय नहीं है। तुम्हें सुखी बनना है, तो तुम अपना संयम कर लो। दुःख से छुटकारा मिल जाएगा।

बात आती है कि चित्त समाधि चाहिए। चित्त समाधि दूसरे से कितनी मिल सकती है और खुद से कितनी मिल सकती है। तुम अपने आपमें शांत हो, गुस्से पर तुम्हारा निग्रह किया हुआ है, समता भाव है, तो दूसरा आदमी कितना ही बोल ले, तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा। तुम अपनी समाधि में रह सकते हो। तुम्हारी चित्त समाधि दूसरों के हाथों में नहीं रहनी चाहिए।

अपने आपका जिसने दमन कर लिया वो इस जन्म में भी सुखी है और आगे भी सुखी है। कोरोना महामारी चल रही है, डरो मत, सावधानी रखो, शांत रहो, अभय का भाव रखो। चित्त में शांति रहेगी। चित्त समाधि तो खुद के हाथ में ही होती है, ऐसा मुझे लगता है।

आत्म-निग्रह जो करता है, उसकी चित्त समाधि रह सकती है। दूसरों पर ज्यादा ध्यान मत दो, अपना संयम रखो। दूसरों ने कुछ कहा और तुम अशांति में चले गए तो तुम तो दूसरों के हाथ के खिलौने बन गए। अपनी समाधि दूसरों के हाथ में मत दो, अपने हाथ में रखो।

अपनी साधना इतनी मजबूत रखो कि दूसरा उसे बाधित न कर सके। मेरी चित्त समाधि मेरे पास है। इतने डरो मत कि दूसरे मेरी चित्त समाधि खराब कर देंगे। सेवा का भाव रखो। चाहे फिर कोई प्रकृति से जटिल हो, उसे अपने पास रखो। प्रकृति से जटिल आदमी तो बीमार जैसा ही है, उसकी सेवा करो।

निमित्त से बचाव सामान्यतया कर लें, पर अपेक्षा है तो निमित्त प्रतिकूल भले ही है, उसको भी स्वीकार करें। मैं दूसरों को समाधि दूँगा तो संभव है, मुझे भी समाधि मिल सकेगी।

गृहस्थों का पारिवारिक-सामाजिक जीवन है, इस जीवन में रहते हुए भी अपने आप का निग्रह करो। तो जीवन अच्छा रह सकता है। एक प्रसंग से समझाया कि अपने आप पर निग्रह नहीं तो आदमी खूब बोलता है। एक प्रसंग से और समझाया कि हम सेवा लेने वाले नहीं सेवा देने वाले बनें।

दूसरों पर कंट्रोल करना हर जगह अपने वश की बात नहीं है, स्वयं का ही निग्रह रखो। अपनी शांति अपने पास रहे। हम शास्त्रों के संदेशों को जितना जीवन में उतार सकें, उतारने का प्रयास करें तो हम ऊर्ध्वारोहण कर सकेंगे।

आज कई साध्वियाँ आई हैं। साध्वी जयश्री जी के साथ की साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी विजयश्री जी के साथ की साध्वी उर्मिला जी, साध्वी शुभप्रभा जी, साध्वी कांतयशा जी, साध्वी शुभवति के साथ की साध्वी संपूर्णयशाजी, साध्वी मननयशा, साध्वी अतुलयशा, साध्वी विवेकश्री जी, साध्वी परमप्रभा जी आदि साध्वियाँ आई हैं, सभी अच्छा काम, अच्छा विकास करें।

साध्वी कमलाप्रभा जी, साध्वी उर्मिला कुमारी जी, साध्वी शुभप्रभा जी, साध्वी संपूर्णयशाजी, साध्वी विवेकश्री जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में गंगरार से पूनम कर्णावट, मनोहरलाल कर्णावट, डिंपल-पारखी कर्णावट, जीविका चोरड़िया, निष्ठा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए बताया कि पुरुषार्थ करणीय होता है।

जन-कल्याण हेतु मिशन एम्पावरमेंट के कार्यक्रम देश भर में आयोजित

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ टास्क फोर्स निरंतर रूप से मिशन एम्पावरमेंट के कार्यक्रम देश भर में कर रहा है। मिशन एम्पावरमेंट के इस कार्यक्रम में लोगों को मेडिकल आपदा से निपटने के गुर सिखाए जाते हैं। प्रशिक्षण के विभिन्न विषयों—ब्लीडिंग, चोकिंग, फ्रैक्चर, त्वचा का जलना, लिफ्टिंग पर जन समाज को महत्त्वपूर्ण जानकारी दी जाती है।

जुलाई के प्रथम सप्ताह में सिलचर, राजाजीनगर, राजाराजेश्वरी नगर, हैदराबाद, रायपुर, मैसूर, कटक, भुवनेश्वर, हुबली, टी-दासरहल्ली, बैंगलुरु में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

उपरोक्त कार्यशालाओं में मुख्य ट्रेनर के रूप में हिमांशु डूंगरवाल, चिराग पामेचा, लोकेश जैन, श्रेणिक कुचेरिया एवं नवीन भंडारी ने सेवाएँ दी।

कार्यक्रम आयोजन में विपिन पितलिया एवं राकेश दक की विशेष भूमिका रही। तेरापंथ टास्क फोर्स लगातार जीवन रक्षक तकनीकों पर देश भर में कार्यक्रम कर रहा है जो मानवीय सेवा की तरफ बढ़ाया गया एक सराहनीय प्रयास है।

तेरापंथ टास्क फोर्स से जुड़ी जानकारी ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे डिजिटल प्लेटफार्म पर भी प्राप्त की जा सकती है। तेरापंथ टास्क फोर्स प्रभारी विकास बोथरा एवं मनीष पटावरी के अनुसार इस तरह के कार्यक्रमों से जुड़कर जीवन रक्षक तकनीकों को सीखा जा सकते है। प्राकृतिक आपदा-विपदा के समय स्वयं और जरूरतमंदों को तत्काल सहायता पहुँचाई जा सकती है।

ज्ञान से आचार की यात्रा में महत्त्वपूर्ण सेतु है...

(पृष्ठ १२ का शेष)

ज्ञानशालाओं में दो बातों पर और ध्यान दिया जा सकता है। एक तो ज्ञानार्थियों की संख्या बढ़ाई जाएँ, दूसरी जहाँ ज्ञानशाला खुलने की संभावना है वहाँ ज्ञानशाला खुलवाई जाए। बाल पीढ़ी के संस्कार निर्माण का काम ज्ञानशाला से हो रहा है। निष्पत्तिमत्ता भी है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पडहोली के सरपंच महीपालसिंह सप्तावत ने अपनी भावना रखी। महासभा द्वारा सरपंच का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हमें भी मोक्ष सेतु का निर्माण करना है।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र सहित...

(पृष्ठ ११ का शेष)

उपरोक्त तीनों कार्यक्रमों में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, महामंत्री मनीष दफ्तरी, कोषाध्यक्ष दिनेश पोकरणा, निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रज्ञा केंद्र के राष्ट्रीय संयोजक अनिल नाहर, सह-संयोजक तेजराज चोपड़ा, अभातेयुप सदस्यगण, तेयुप राजराजेश्वरी नगर के अध्यक्ष नरेश बांठिया, मंत्री धर्मेश नाहर, जैन संस्कार प्रभारी कौशल लोढ़ा, तेयुप पदाधिकारीगण, परामर्शक मंडल के सदस्य, प्रबुद्ध मंडल के सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण एवं अनेकों सदस्यों के साथ-साथ सभा/ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज डागा, पूर्व अध्यक्ष कमल दुगड़, महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज बैद एवं अनेकों दानदाताओं के परिवारों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इन तीनों कार्यक्रम के अलावा सम्मान समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया, जिसमें इन तीनों उपक्रमों से जुड़े सभी भामाशाह परिवारों का जैन पट्ट, एवं मोमेंटो से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री धर्मेश नाहर ने किया एवं आभार ज्ञापन परिषद के उपाध्यक्ष रणजीत चौपड़ा ने किया।

PDF Compressor Free Version

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला आरोहण का आयोजन

मानव सेवा को समर्पित वृहद उपक्रमों का शुभारंभ

दो आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का उद्घाटन

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारंभ

आचार्य तुलसी डेंटल केयर का शुभारंभ

चेन्नई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर, आचार्य तुलसी डेंटल केयर एवं डिजिटल एक्स-रे मशीन का लोकार्पण जैन संस्कार विधि से किया गया। उद्घाटन समारोह के कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अध्यक्षता करते हुए तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई को इस वृहद आयोजन के लिए शुभकामनाएँ संप्रेषित की। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के उद्घाटन से पूर्व साध्वी अणिमाश्री जी ने मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम में अभातेयुप से उपाध्यक्ष अमित नाहटा, महेश बाफना, महामंत्री मनीष दफ्तरी, कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरणा, निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने तेयुप, चेन्नई को ऐतिहासिक आयोजन के लिए बधाई संप्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने इस वृहद आयोजन के लिए संपूर्ण परिषद एवं दानदाताओं को साधुवाद दिया। परिषद की तरफ से प्रायोजक परिवार रणजीतमल कंचन देवी छल्लानी, ज्ञानचंद राकेश कुमार आंचलिया, शोभालाल मुकेश कुमार बाफना, तनसुखलाल दिलीप नाहर, देवीलाल पुष्पा बाई रांका परिवार का सम्मान किया गया।

व्यासरपाड़ी एमकेडी नगर, तेरापंथ ट्रस्ट द्वारा अभातेयुप परिवार का सम्मान किया गया। विभिन्न चरणों में आयोजित इस समारोह का संचालन परिषद उपाध्यक्ष मुकेश नौलखा ने किया। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण सुराणा एवं मंत्री विशाल सुराणा ने किया। शनिवारीय सामायिक साध्वीश्री जी के सान्निध्य में पुलल में की गई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के प्रांगण में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'आरोहण' का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। किशोर मंडल, चेन्नई के द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। कार्यशाला में साध्वीश्री जी ने कहा कि सर्वांगीण विकास के लिए, कामयाबी के शिखर को छूने के लिए, अखंड व्यक्तित्व निर्माण के लिए, खुशहाल जीवन एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति का आरोहण जरूरी है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आरोहण के ३ सूत्र हैं–पहला वचन का पक्का, दूसरा आचरण का पक्का और तीसरा चिंतन सदैव उच्च रहे। साध्वीश्री जी ने इन तीनों सूत्रों को युवा शक्ति को स्वयं के जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

तेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान कर परिषद में ऊर्जा का संचार किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने चेन्नई परिषद की सराहना करते हुए कहा कि यह जागरूक परिषद है और यहाँ नाम में नहीं काम में विश्वास किया जाता है। निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि साध्वी अणिमाश्री जी युवकों को आरोहण का मार्ग दिखाती हैं। अभातेयुप महामंत्री मनीष दफ्तरी ने चेन्नई परिषद के कार्यों की सराहना की।

इस कार्यशाला में सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा शांतिदूत दुधोड़िया, एटीडीसी के राष्ट्रीय प्रभारी भरत मरलेचा, परिषद प्रभारी पवन मांडोत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यशाला में विविध उपक्रमों के शुभारंभ में आर्थिक सहयोग देने वाले परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेयुप, चेन्नई के सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने एवं आभार ज्ञापन विशाल सुराणा ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र सहित विभिन्न उपक्रमों का शुभारंभ

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा विविध उपक्रमों के उद्घाटन समारोह क्रमशः एवरेज ब्लड शुगर लेवल मशीन, तेयुप कार्यालय, आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र का आयोजन किया गया। प्रातःकालीन शुभ मंगल बेला में अभातेयुप के सेवा, संस्कार, संगठन के त्रिआयामों के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में एवरेज ब्लड शुगर लेवल मशीन, तेरापंथ सभा भवन में तेयुप के स्थायी कार्यालय तथा चन्नपटना में आचार्य महाप्रज्ञ जी के अवदानों से मानवता को आलोकित करने हेतु आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र का अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक संस्कारक राकेश दुधोड़िया, दिनेश मरोठी, डॉ० आलोक छाजेड़ ने विविध मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार करवाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कहा कि चार साल के अल्प समय में तेयुप राजराजेश्वरी नगर इतने स्थायी उपक्रमों का संयोजन कर रही है यह विशेष बात है। राष्ट्रीय महामंत्री मनीष दफ्तरी ने भी तेयुप राजराजेश्वरी नगर के कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में तेयुप राजराजेश्वरी नगर को बधाई देते हुए हॉस्पिटल खोलने का आह्वान किया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने एवरेज ब्लड शुगर लेवल मशीन का एवं तेयुप कार्यालय का फीता खोलकर उद्घाटन किया तो वहीं निवर्तमान अध्यक्ष एवं भामाशाह विमल कटारिया एवं मधु कटारिया परिवार ने आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र का उद्घाटन फीता खोलकर किया। ज्ञात रहे एवरेज ब्लड शुगर लेवल मशीन के प्रायोजक विजयलक्ष्मी इंदरचंद चौपड़ा परिवार था और तेयुप कार्यालय के लिए तेरापंथ सभा/ट्रस्ट ने स्थान उपलब्ध करवाया तो वहीं मारुति मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट ने आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र के लिए स्थान उपलब्ध करवाया। (शेष पृष्ठ १० पर)

एटीडीसी में नवीन मशीन का उद्घाटन

तेयुप कार्यालय का शुभारंभ

PDF Compressor Free Version

✦ विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
–आचार्य श्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण सेतु का लोकार्पण

ज्ञान से आचार की यात्रा में महत्त्वपूर्ण सेतु है अच्छे संस्कार : आचार्यश्री महाश्रमण

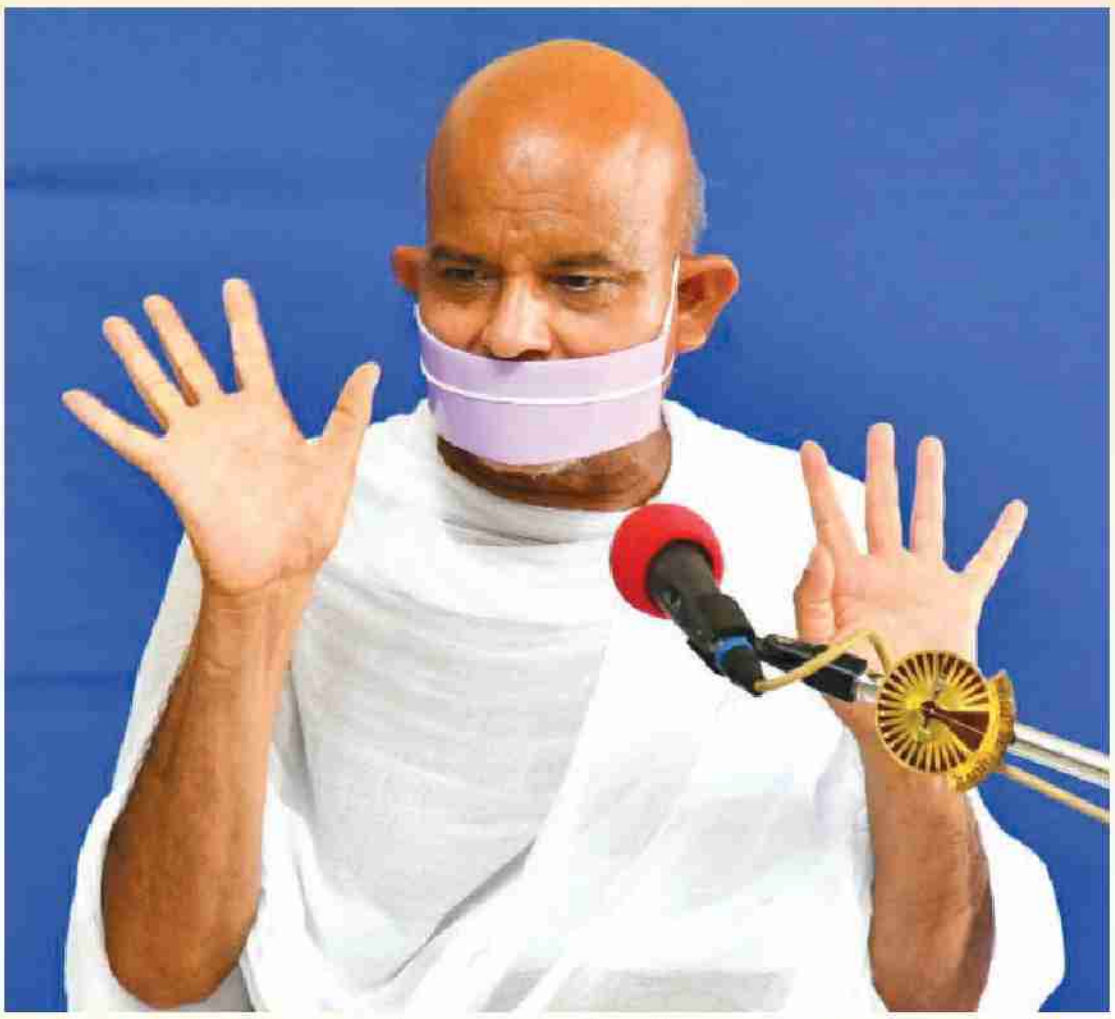

कुथौली, १३ जुलाई, २०२१

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में आज प्रातः आचार्यश्री महाश्रमण सेतु का उद्घाटन चित्तौड़गढ़ में हुआ। मोक्ष मार्ग के सेतु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं–ज्ञान और आचार। ज्ञान के द्वारा आदमी यथार्थ को जान लेता है।

दूसरी बात है–आचार। आचार में ज्ञान परिणित कैसे हो? जान लिया। हिंसा बुरी है। हिंसा न करने की बात आचार में कैसे आए? नदी के दो किनारे हैं। एक किनारे से दूसरे किनारे के पार पहुँचना है, उसका एक उपाय है–सेतु बंध। पुल बना दो, नदी पार हो जाएगी। नौका से या चलकर भी पार जाया जा सकता है। ज्ञान से आचार तक की यात्रा करनी है, उसके लिए एक सेतु चाहिए, वह सेतु है–दर्शन या संस्कार। उत्तराध्ययन में बताया गया है–ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप ये चार मोक्ष मार्ग बताए गए हैं।

यह दर्शन है, यह एक सेतु है। दर्शन पुष्ट नहीं होगा या संस्कार नहीं बनेगा तो वह जानी हुई बात आचार में न भी आ पाए। बच्चे को ज्ञान तो दे दिया कि ये-ये काम खराब है, नहीं करना, पर ये बातें उसके दिमाग में वो श्रद्धा-निष्ठापूर्वक बैठ हो जाए तो वो ज्ञान आचार में आ सकता है। बार-बार समझाने से, परिणाम को जान लेने से उसे समझ में आ जाएगा, वह नहीं करेगा।

सम्यक्दर्शी पाप से बच सकता है। निष्ठा जाग जाए, जिस कार्य के प्रति श्रद्धा हो जाए, भीतर का प्रेम हो जाए तो कठिन काम करना भी आसान हो सकता है। नियम के प्रति ज्ञान के प्रति प्रेम जाग जाए, निष्ठा जाग जाए तो फिर वे ज्ञान की अच्छी बातें हैं, वो आचार में परिणित हो सकती है। संस्कार सेतु है, वो पुष्ट हो गया तो जानी हुई बातें आचरण में आ सकती है।

ज्ञान के समान मानो पवित्र चीज नहीं है। विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनेक विषयों का ज्ञान दिया जाता है। अज्ञान तो अभिशाप है। अज्ञान आवृत्त चेतना वाला व्यक्ति हित-अहित का भी बोध नहीं कर सकता। ज्ञान एक तलवार है, अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करने के लिए। ज्ञान अग्नि के समान है, जो अज्ञान रूपी ईंधन को जला डालती है। ज्ञान एक दीपक है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर देता है।

ज्ञान अथाह है, ज्ञान ग्रहण का प्रयास करो। सूर्य नहीं बन सकते तो दीपक तो बनो। ज्ञान एक सूर्य है, फिर अज्ञान का अंधकार नहीं रहता। ज्ञान से हमें प्रकाश मिल जाता है। संस्कार निर्माण का काम है, वो एक तरह से सेतु निर्माण का काम है। सेतु से मार्ग आसान हो जाता है। एक कहानी से समझाया कि संस्कार देने से छोटों का स्वभाव बदल सकता है। बड़ों का स्वभाव बदलना मुश्किल हो सकता है। विद्यालयों में भी बच्चों में अच्छे संस्कार आ जाएँ तो एक ओर ज्ञान बढ़े और दूसरी ओर अच्छे संस्कार आ जाएँ तो विद्यार्थियों का जीवन कितना बढ़िया हो सकता है।

भारत देश के पास अनेक ग्रंथ, पंथ और संत संपदाएँ हैं। बच्चे अच्छे होंगे तो देश भी अच्छा हो सकेगा। जीवन-विज्ञान से भी बच्चों में अच्छे संस्कार निर्माण का प्रयास है। बच्चों में ज्ञान और आचार अच्छे हैं, तो उनमें एक तरह से परिपूर्णता आ सकती है। कोरा ज्ञान अधूरा है।

हमारे धर्मसंघ में ज्ञानशाला एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। ज्ञानशाला में संस्कार निर्माण का कार्य अच्छा हो सकता है। अच्छे आचार का निर्माण भी ज्ञानशाला के माध्यम से हो सकता है। जगह-जगह ज्ञानशाला के माध्यम से श्रम किया जा रहा है। स्कूल के ज्ञान के साथ धर्म का ज्ञान भी बच्चों को मिलता रहता है। ऐसे उपक्रम उपयोगी हैं, इनसे सीधा लाभ मिलता है। ज्ञानशाला प्रयास भी है और परिणाम भी है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पूज्यप्रवर का भीलवाड़ा में मंगल प्रवेश

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**